भूमिका ।

छन्द हरिगीतिका ।

राजीवलोचनमघविमोचनमजितमनुजसहायकं ।
बहु बीचि बिपुल तरे सरस्वति शैलसेतुविधायकं ॥
न्रसुरारिनाशनहेतवे करकृतसरासनसायकं ।
प्रणमामि रामममापिकं रघुनायकं वरदायकम् ॥

दोहा ।

जय गणेश गौरीसुवन बिघनबिनासनहार ।
गुनमन्दिर सिन्धुरबदन इन्दुर पर असवार ॥
द्वैकर अकर सहस्रकर चारिचार करवन्त ।
प्रथम पंचकरकों सुमिर आनँद लहत अनन्त ॥
जय गिरीशगेहिनि उमा जो जग परम उदार ।
अबहूं लौं जा पय पियें छाजत छमुख कुमार ॥
सौमुख सुमुखि सहस्रमुख छमुख सहित हित साँच ।
राम नाम नित उच्चरत जय महेस मुख पाँच ॥
जय महेसप्रिय सेस अहि जो लहि बदन हजार ।
भाषत नाम सु राम के द्वै हजार इक बार ॥

सोरठा ।

जय जय पवनकुमार, भयभञ्जन अञ्जनितनय ।
परम रुद्र अवतार, जाहि गनीजतु ग्यारहौं ॥

बालमीकि मुनिराय, कारुनीक जय जगत मैं ।
कियौ एक सुख पाइ, रामचरित सत कोटि जिन्ह ॥
जय जय तुलसीदास, जस अपार संसार मैं ।
रामचरित परगास, जिहिँ नर भाषा कहि राख्यौ ॥

दोहा ।

रामचरनं चिन्हित धरै जो सिर सिखर समाज ।
परम पवित्र बिचित्र जय चित्रकूट गिरिराज ॥
जय गंगा गोदावरी सरजू अवध प्रयाग ।
जिम सुमिरतहीं ऊपजत रामभक्ति अनुराग ॥
बालमीकिकृत संसकृत लखि रामायन पन्थ ।
पद्माकर भाषा रचत रामरसायन ग्रन्थ ॥

श्रीगणेशाय नमः ।

रामरसायन ।

पद्मांकर कृत ।

अथ बालकाण्ड ।

छन्द हरिगीतिका ।

अति मतिप्रकासक पापनासक भक्तिभासक भूरि है।
फल-चार-दायक सर्वलायक रहेहु गुन निजु पूरि है ॥
देखहु सुनहु सुनि पुनि सराहहु कहहु बरन बिसालहै।
श्रीरामजन्म चरित्रवन्त पवित्र काण्ड सुबाल है ॥

दोहा ।

एक समै जपतपनिरत नारद सौं यह बात ।
बालमिकि बूझत भये पुनि पुनि करि प्रनिपात ॥

चौपाई ।

व इहलोक पुरुष अस को है। जो निजबल अरि अखिल बिमोहै॥
रबिहित ध्रुवधरम बिधाता । सत्यसदन सरनागतत्राता ॥
हि न धर्म्म जु बिपति परेंहू । जाहि न प्रिय पातक सपनेंहू ॥
जीव जीवनहितकारी । पालकप्रजनि बिमल ब्रतधारी ॥
आत... कवन अनातम को है। याको तत्व बिजानत जो है ॥
गुनमन्दिर सुन्दर परबीनो । चपल चित्त जिंहिँ निजबस कीनो॥
नर किन्नर सुर असुर समेता । काम क्रोध लोभादिक-जीता ॥
एरगुन सु...त बिदूषत नाहीं । ताहि कहहु जो अस जगमाँहीं ॥

हौ तुम तिहुँलोकन के गामी । सुचि सरबज्ञ मुनिन के स्वामी ॥
ममउरअमित सुननकी इच्छा । तातें यहहि सु दीजै भिच्छा ।

दोहा ।

या बिधि बूझि सु चुप रहे बालमीक मुनिराइ ।
नारद मुनि तिन सौं तबहिं बोले हिय हरषाइ ॥

चौपाई ।

बालमीकमुनि सुन ममबानी । या बिधि कौ कहुँ सुलभ न प्रानी॥
तदपि बखान बतावहुँ तोही । जिनहिँ निरखि मेरी मति मोही॥
इक इच्वाकु कुलहि मैं देखे । रामचन्द्र सब गुननि बिसेखे ॥
प्रबल-पराक्रम धीरजधारी । श्रीयुत सुबुधि सहित हितकारी॥
गुननि गँभीर जलदवत बानी । मुख सोभा नहिँ जाति बखानी ॥
कम्बु कण्ठ गुरु गोल कपोला । सु उर उदारहु बचन अडोला ॥
सु बृषकन्ध सम कन्ध उमाहू । ओजहु अमित अजानु सु बाहू ॥
सु सिर छत्रवत बिमल शरीरा । बरन बिभा जनु नीले हीरा ॥
लोचनललित ललाटबिशाला । सघन सुभग अँगुरिन की माला॥

दोहा ।

निज अँगुलनि छियानवै अंगुल उच्च शरीर ।
सुन्दर इन्दीबरबरन महाबाहु रघुबीर ॥

चौपाई ।

जो समुद्र सुभ लच्छन गाये । ते सब राम सुलभही पाये ॥
सत्यसदन धरमज्ञ पुनीता । इन्द्रिनसहित सुमन जिन जीता॥
तात-मात-गुरु-आज्ञाकारी । धरहिँ धनुष प्रिय जन रखवारी॥
आगमनिगम चरित के ज्ञाता । धनुरबेद पढ़ि जो जगत्राता ॥

बैठक रुचि सज्जननि सभा मै । को अस जो न बिलोकहि रामै ॥
तजहिं न सिन्धुसरिस मरजादा । रुचिर रूप मनमथ तें जादा ॥
मनहु हिमाचल धीरज माहीं । जिन सम सधन कुबेरहु नाहीं ॥
या बिधि बिबिधि गुननिसों पूरे । इक्कहि राम दशरथसुत रूरे ॥
जिनहिं देखि दशरथनृप राजी । दैन बिचारत भे युबराजी ॥
सकल प्रजा पालन के काजें । साजी अभिषेकहिं की साजें ॥
तिनहिं निरषि कयकेयिसुरानी । बोली नृप दशरथ सौं बानी ॥
द्वै बर दैन कहे जे आगे । ते अब देहु नृपति मुहि मागे ॥
राम बरस चौदह बन जावें । भरथ यहै युबराजी पावें ॥
तथा अस्तु सुनि पितुकी बानी । चलि भे राम बनहिं धनुपानी ॥
तिनकि संग लखन अरु सीता । चलत भये बन करन पुनीता ॥
तबहिं सुमन्त तिहुनि रथमाहीं । राखि गयहु लै गंगा ताहीं ॥
तहँ सुश्रृङ्गबेरहि पुरहीतें । सोख सुमन्तहि दीन्हि पुनीतें ॥
बहुरि सुमन्त अवध कहँ चलेऊ । भिल्ल नृपति गुह रामहिं मिलेऊ ॥
तहँ तें राम चले पदचारी । भ्रात लषन सँग सीता नारी ॥

दोहा ।

भरद्वाज सों चलि मिले पुनि रिषिमत लै राम ।
चित्रकूट गिरिवर जहाँ तहाँ कीन्ह विश्राम ॥

चौपाई ।

तबलगि नृप दशरथ सुतशोकी । तजि निजप्रान भयहु सुरलोकी ॥
तब बसिष्ठमुनि मातुलपुर तें । भरथहिं बोलिकह्यो यह तुरतें ॥
करहु राज यह सुनि मुनिबानी । बंसबिभूषन भरत न मानी ॥
चित्रकूट तहँ भरतहु आये । करि प्रनिपति बहुविनय सुनाये ॥

सो सुनि राम तिलककी इच्छा । करत न भे पालत पितुसिच्छा ॥
सु पद पादुकनि सौंपत राजे । भरतहि सीष दई पुर काजे ॥
भरत जटाबलकलव्रतधारी । आये नन्दिग्राम पदचारी ॥
बसि तहँ राखि पादुकनि सौंहैं । पालत भे सु अवधिपुर कौंहैं ॥

दोहा ।

चित्रकूट गिरि में निरखि पुरबासिन की भीर ।
चले दण्डकारण्य कों तितहू तें रघुबीर ॥

चौपाई ।

चलि बिराध रिपु राक्षस मारो । पुनि तपसी सरभंग निहारो ॥
भेंटि सुतीक्षन मुनि सौं आछैं । लखे सबंधु अगस्तिहु पाछैं ॥
सुरपति के आयुध मुनि दीन्हें । असि तरकस सर धनुष सुलीन्हें ॥
अक्षय तरकस बाँधि कटी में । बास कियौ चलि पञ्चबटी में ॥
तहँ निसि चारिन कृत बहुसंका । कहत राम सौं भे रिषिरंका ॥
कीन्हि प्रतिज्ञा तहँ रघुराजै । सकल निशाचर मारन काजै ॥
सूरपनषहु तहँहि चलि आई । काटि श्रवन अरु नाक भगाई ॥
तब खरदूषन त्रिशिरा धाये । चौदह सहस निशाचर आये ॥
हन्यहुराम तिनकहँ तिहि ठाईं । ये खबरैं जब रावन पाईं ॥
सक्रुध सुमारीचहि ढिग आयौ । तिहिँ रावन कौं बहु समुझायौ ॥
मारीचहु की बात न मानी । ताहि चल्यौ लै सँग अभिमानी ॥
रचि माया मारीच सु आछैं । लै रामहि गौ दूरि सु पाछैं ॥
गे लछमन पुनि तहँहि सनेही । रावन हरिय तबहिं वैदेही ॥
लै करि सीय चल्यौ जब लंकै । खग रोक्यौ मग माहिं निसंकै ॥
हन्यहु जटायु सु रावन बङ्का । सियहिँलिये द्रुमि पहुंच्यौ लङ्का ॥

दोहा ।

इतनै मै मारीच हनि आये दोऊ बीर ।
परनकुटी सियरहित लखि किय चिन्ता धरि धीर ॥

चौपाई ।

चलत भये तहँ तैं रघुराई । सीय हरन सुधि खग पहँ पाई ॥
तारि खगहि खोजनहित सी कै । किय पुनि गमन रमन जग नीकै॥
तहँहिं कबन्ध दुहुन पर धायौ । ताहि निहनि सुरलोक पठायौ ॥
मानि बचन तिहिँ कै सबरी पै । आये राम समुझि हित ही पै ॥
तहँ भीलिनिकृत लहि सनमानै । पंपातीर लख्यौ हनुमानै ॥
हनुमतबचन समुझि दुहुभाई । मिलत भये सुग्रीवहिँ जाई ॥
निजदुखसबकपिपतिसौं कह्यऊ । साखिअगिनकरिमित्रसुभयऊ ॥
पुनिसुकण्ठ निजदुखहिसुनायौ । बालिहननपन राम उठायौ ॥
सुनि सुकण्ठ पन करि सन्देहै । भे जु दिखावत दुन्दुभि देहै ॥
गिरि समान तकि तहँ रघुराई । सुपग अंगुठहि लीन्ह उठाई ॥
फेंक्यौ ताहि सुबल दरसाई । दस जोजन पर परहु सु जाई॥
सप्त ताल महि शैल समेता । इकहि बान भे तिन सा भेता ॥
तब परतीति सुकण्ठहिँ आई । गयहु बालि पर करन लराई ॥
लै रामहिँ किसकिन्धा गाज्यौ । आयौ बालि तबहि बल साज्यौ॥
राम इकहि सर बालिहु मार्यौ । ताकै राज सुसख बैठार्यौ ॥
तब सुकण्ठ सिय खोजन काजैं । भेजी दिशिदिशि सुकपि समाजैं॥
तब हनुमत सम्पातिगिरा तैं । उलँघि सिंधु सत जोजन तातैं ॥
देखि सुसियहिअशोक बटी मैं । किय अति संबोधन तिहि जीमैं॥
कपि पुनि उपबन बारिहु तोरी । पंच सेनपति सेन मरोरी ॥

तिनहि मारि पुनि अच्छकुमारै। मारत भयहु जबहि तिहि बारै॥
आइ इन्द्रजित अजित तहाँहीं । बाँध्यौ बिधिफासहिँ के माहीं ॥
यौं गहि ताहि तबहिँ लै गयऊ । पुनि ज्यौं त्यौं कपि छूटत भयऊ॥
सियनिवास तजि सिगरी लङ्का । जारिचल्यौ कपि उलटि निसङ्का॥
सियसुधि आइजु रामहिंदीन्ही । रामहुं तबहिँ तयारी कीन्ही ॥
सहितसुकण्ठ कटककपि बीरा । पहुंचे जाइ समुद के तीरा ॥
तबहिँ सिंधु पर सर सन्धानौ । मिल्यहु उदधि धरि देह सुजानौ॥
सिन्धुबचन सुनि नल किय सेतू । उतरे सिन्धु सबल कुलकेतू ॥
पुनि सकुटुम रिपु रावन मार्‍यौ । लखि सीतहिँ कटु बचन उचार्‍यौ॥
तब सिय अगिनप्रवेश कियौई । अगिन सुद्ध कह ताहि दियौई ॥
देवन सौं मिल राम तहांहीं । थापि बिभीषन लङ्का मांहीं ॥
भे रघुपति कृतकारज ऐसैं । लहि बरदान सुरन पँह वैसैं ॥
पुष्पक पर चढि अवधपुरी कौं । चलत भये जु सुखद सबही कौं ॥
भरद्वाज सौं मिलि हनुमानै । भेजि भरत ढिग कौं अगिमानै ॥
आये नन्दियग्रामहि आछैं । मिले सकल लोगनि ता पाछैं ॥
बलकल जटहु तिहुन तहँत्याजे । राम सबनि जुत अवध बिराजे ॥
रामराज नहिँ कोऊ रोगी । नहिँ दुरभिच्छ न सुजनबियोगी ॥
पुत्र मरन नहिँ विधवा नारी । पवन अगिन जल भयहु न मारी॥
व्याधि छुधा चोरहु भय नाहीं । सुख सम्पति अति नगरिन माहीं॥
किय सत अश्व सुसख दुजमानै । दिय दस सहस कोटि गोदानै ॥
व्यापि धरम करि राज रजाई । ग्यारह सहस बरस तहँ ताई ॥
बहुरि पधारहिँगे निज लोकै । राम करत सब सुरनि असोकै ॥
ये सब रामचरित जो कोऊ । पढ़हि सुनहि अघमोचहि सोऊ ॥

होत बिप्र पढ़ि आगमज्ञाता । क्षत्री सुनत होत महिज्ञाता ॥
बनिक लहत सुनि धन अधिकाई । लहत सूद्रकुल उत्तमताई ॥

दोहा ।

जे इहं पाहिले सर्ग कौं गावहिं सुनाहिं गवाइ ।
ते नर प्यारे राम कौं सदा रहत सुख पाइ ॥

इति बालकांडे प्रथमः सर्गः ॥ १ ॥

छन्द ।

यौं मुनिबचन बलमीकिसुत सुनि अति सराहत ही भये ।
तहँ माँगि ऋषि सौं सीखि नारद स्वर्गलोकहि कौं गये ॥
तब बालमीकिहु मध्य दिन सन्ध्या उपासन के लियैं ।
सुरसरि-निकट तमसा नदीहु ससिष्य गे हर्षत हियैं ॥

दोहा ।

निरमल सलिल बिलोक तहँ बालमीकि मुनिराउ ।
भरद्वाज प्रिय सिष्य सौं कह्यौ कलस धरि आउ ॥

चौपाई ।

देहु सुबलकल मुहिँ पहिरे कौं । न्हैहौं इत सन्ध्याहि करे कौं ॥
ले बलकल मुनि पहिरत माहीं । बिपिन बिलोकत भे चहुंघाहीं ॥
तहँ निषाद इक क्रौंच सँघार्‌यौ । किय बिलाप ताकी तिय भार्‌यौ ॥
कारुनीक मुनि सुनिकरि क्रोधे । दीन्ह्यौ स्राप निषाद अबोधे ॥

सापकौ श्लोक ।

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः ।
यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम् ॥

श्लोकार्थ दोहा ।

बहु बरसन लौं तूं न लहु उत्तम लोक निषाद ।
इह कामी जुग क्रौंच तैं एक हन्यौ जो बाद ॥

चौपाई ।

दै स्रापहि मुनि सोचत भयऊ । पुनि यह बचन सिष्य सो कहऊ॥
स्रापबच्चन यह छन्द बत्यौई । मम मुख तें अब निकसत भौई ॥
तातैं स्रापबचन यह मेरौ । कीरति रूपै होइ घनेरौ ॥
या कहि न्हाइ सुकरि सन्ध्याकौं । चलें बिचारत उनहीं आकौं ॥
संग सिष्य जलकलस जु लीन्हे । यौं आगमन सुआश्रम कीन्हे ॥
मिलन मुनिहिँ तहँ ब्रह्मा आये । तिनहिँनिरखिरिषिसनमुखधाये ॥
करि प्रनाम दै अरघ सु आछैं । आसन पर पधरायो पाछैं ॥
बिधिवतबिधिपूजनमुनिकीन्हौं । ह्वै प्रसन्न बिधि आसिष दीन्हौं ॥
लहि आयसु बैठे पुनि मुनिहूं । बूझत कुशल प्रश्न पुनि पुनिहूं ॥
तबहूं मुनि वे बचन बिचारे । भौ कह धौं किहि भाँति उचारे ॥

दोहा ।

पुनि पुनि वाही अरथ कौ मुनिवर करत विचार ।
सुनि विरंच बोले बचन बालमीक सौं सार ॥

चौपाई ।

मम निदेश तव मुख तें ज्ञानी । छन्दबन्द ह्वै निकसी बानी ॥
तातें रामचरित जौ जैसौ । नारद कहिउ सुन्यहु तुम तैसौ ॥
श्लोकबद्ध सौं बरनन करेऊ । सकल सविस्तर क्रम अनुसरेऊ ॥
जे कछु रामचरित की बातैं । ते मम बर जानहुगे यातैं ॥

तव कृत रामायन कबिताई । चौदहुं भुवन होयगी थाई ॥
जबलगि गिरिकाननजुत धरनी । रहिहै तलगि कथा तुव बरनी ॥
तुमहूं सत्य भुवन के बासी । तब लगि ह्वै हौ सुजसप्रकासी ॥
या कहि अन्तर्रहित बिधिभयऊ । तब ससिष्य मुनि कौतुक लह्यऊ ॥
श्लोक वहै पुनि मुनि लै बीना । गावत भे चौ चरन नवीना ॥

दोहा ।

स्रापबचन ज्यौं छंद भौ यौंही छंद बनाइ ।
हौं गावहुँगो रामजस सुनहिं संत जन आइ ॥

इति बालकांडे द्वितीयः सर्गः ॥ २ ॥

छन्द ।

इहि बिधि सुबिधि बरदान तें फिर जानिबे कौं सब कथा ।
करि आचमन सुपवित्र ह्वै करि सुमुख पूरब कौं तथा ॥
बैठे कुशासन जोरि कर निज मूंद दृग दोऊ लये ।
रघुबरचरित मुनि बालमीकि समाधि मैं देखत भये ॥

दोहा ।

ज्यौं कर-आगत आरसी त्यौंही रामचरित्र ।
सविस्तार परगट भये मुनि कौ परम पवित्र ॥

चौपाई ।

देखे रामचरित मुनि जैसे । रामायन रचि बरनै तैसे ॥
तामे रामजनम तें लै कै । और चरित बिच बीचहिँ दै कै ॥
गये ब्रह्मलोकै तहँ ताईं । यौं मुनि रामकथा सब गाईं ॥

दोहा ।

करत सुराजहि राम कौं रामहि के सुचरित्र ।
भावी भूत प्रतक्ष ते बरनै सुमुनि विचित्र ॥

इति बालकांडे तृतीयः सर्गः ॥ ३ ॥

छन्द हरिगीतिका ।

तहँ श्लोक चौबिस सहस भे रघुराज रामायन बिषैं ।
सुभ सातकाण्ड सुसर्ग साढ़े पांच् से आये लिखैं ॥
एती सुकृत कबिता निरखि मुनिवर बिचारत भे भलैं ।
यह कौन पढ़िहै गौ सु कैसे प्रगट होहि महीतलैं ॥

दोहा ।

यह बिचार करतहिं तबहिं धरे मुनिन के भेष ।
राजपुत्र लवकुश दुहूँ तहँ आये सु विसेष ॥

चौपाई ।

करि प्रनाम मुनि दोऊ भाई । बैठत भे मुनिआज्ञा पाई ॥
तिनकौं मुनि कबिता सुपढ़ाई । जो सब निगम अरथमय गाई ॥
पढ़ि रामायन राजदुलारे । निपुन गानविद्या मै भारे ॥
सुद्रुतबिलम्बित मध्य प्रमानै । सरिगम पधनि सपत सुर जानै ॥
निजसुर बीनासुरनि मिलाई । सु रिषिन ढिग रामायन गाई ॥
सुनिरिषिसकलमधुरमृदुबानी । साधु साधु कहि बहु सनमानी ॥
अचरज मानि ऋषीश्वर बोले । चरित सु बहु दिन की तुम खोले ॥
गाइ भले परत्यच्छ दिखाये । ते सुनि सुनि हम सब सुख पाये ॥

या कहि रिषि परसन ह्वै जेते । देत भये बलकलदल तेते ॥
दीन्ही इकनि मृदुल मृगछाला । इकनि जनेऊ इकनि सुमाला ॥
इकनि सु आसन फूलनि गूंजी । इकनि कमण्डल एकनि मूंजी ॥
इकन मेखला बसन कषाए । एकन काठ कुठार सुहाए ॥
इकनि केस बाँधन कों डोरे । इकनि कन्द फल फूल बहोरे ॥
इकनिदण्डपुनिइकनिलगोंटी । बाँधी इकनि जटाजुत चोटी ॥
एकनि उदित उपरना दीन्हें । चिरञ्जीव इमि एकनि कीन्हें ॥
दै आसिष इक स्वस्ति बखाने । या विधि रिषिन दुहूं सनमाने ॥

दोहा ।

यौं बर लै सुरिषीन के लवकुश राजकुमार ।
रामायन गावत भलें आये अवध मझार ॥

चौपाई ।

भे गावत चलि नृप मगमाहीं । रामचन्द्र भे सुनत तहांहीं ॥
तबहिँ दुहुन कौं लीन्ह बुलाई । बहु सनमान कियौ रघुराई ॥
सिंहासन पै राम बिराजे । मंत्री बंधु पुरोहित साजे ॥
बोले राम सुमुख हित ही सौं । भरत शत्रुघन लछमन जी सौं ॥
सुनहु गान यह सुन्दर ऐसौ । पद बिचित्र अरथहु है तैसौ ॥
मधुर कंठ सुर दोउन के हैं । मिलि बीना सुर संग रहे हैं ॥
अति आनँद उपजावत जी कौ । प्रिय कानन कहँ खैंचत ही कौ ॥
राजलच्छननि लच्छित ये हैं । मुनिकुमार नहिँ जात कहे हैं ॥
इनकौ गान रुच्यौ मनमांहीं । तुमहूं सुनहु सुचित दै छांहीं ॥

दोहा ।

तब लवकुश मुनिकृत कथा आदिहि तें अनुसारि ।
गावत भये सुबीन लै सुनत् बंध तहँ चारि ॥

इति बालकांडे चतुर्थः सर्गः ॥ ४ ॥

छन्द ।

यह भूमि बैवस्वत मनहु के बंस के राजान की ।
तहँ भे सगर तिनकी जु सन्तति साठ सहस प्रमान की ॥
इच्छाकु नृप तिनके सु कुल मै यहै रामायन भयौ ।
सो सुनहु गावत हैं जु हम सुभ काव्य जो नव रसमयौ ॥

कथा का आरम्भ ।

दोहा ।

राजति कोशिलदेश मैं सरजू-सरितातीर ।
पुरी अजुध्या जो रची बैवस्वत मनु बीर ॥

चौपाई ।

बारह जोजन जासु लमाई । जोजन तीस लसत चौराई ॥
अतिरथि नृपदशरथ नगरी सो । साजत भे सब विधि सिगरी सो ॥
अति सुन्दरमन्दिर सुगली त्यौं । सब सोभन की अव अवली ज्यौं ॥
दृढ़ कपाट पुरद्वारनि साजे । रुचि इक सार बजार समाजे ॥
चौरें चौपरिं के गलियारे । ऊँचे मनिमन्दिर चौबारे ॥
प्रगट पताका फब फहरातीं । बहु बागनि आमन की पाँती ॥
मनिमय राजमहल सुदिवाले । बारबधुन के नाटकसाले ॥
अति अटूट पुर कोट सम्हारे । जंचित तंच सु आयुध भारे ॥

राखीं तरह तरह की तोपैं । जे गज गाजहु की मद लोपैं ॥
आस पास पुरु गहिरी खाहीं । जलजुत जे न उलंघिय जाई ॥
राखि बोलि बनिक बंजारे । दिश देशन के साहूकारे ॥
चारन भाट गुनीगन जेते । जसगायक गायक पुनि तेते ॥
मुलक मामलत दीवहि आये । जे नृप नेक तितहि ते छाये ॥
कामनीनि की केलिहबेली । जिन बिच चन्दन चम्प चमेली ॥
चौसर भूमि अगर अगरी यों । साजी नृपति अवध नगरी त्यों ॥
घर घर बीन मृदङ्ग सुहाये । बाजत अति आनन्द बधाये ॥
हय हाथी रथ ऊँट घनेरे । खुलत खरे फौजन के डेरे ॥
सकल अन्न धन की अधिकाई । जल पियूष सम सुचि सियराई ॥
सुभट सबदबेधी जे गाये । महा मल्ल निजभुजबल छाये ॥
सिंहबाघगज निजभुज गहहीं । ऐसे पुरुष बसाये तहहीं ॥

दोहा ।

आगम निगम खडंग पढ़ि अगिनिहोत्र करतार ।
बहुत बिप्र ऋषि तुल्य तहँ राखे भूभरतार ॥

इति बालकांडे पञ्चमः सर्गः ॥ ५ ॥

छन्द ।

तब निगमआगमज्ञानजुत इक्ष्वाकुकुल मे अतिरथी ।
तपतेजमान प्रमान हित जिहिँ सेन शत्रुन की मथी ॥
मानहु महारिषि यज्ञकरता सुघन धनदहु से ठये ।
ज्यौं मनु सु त्यौंही नृपति दशरथ अवधपुर पालत भये ॥

दोहा ।

सब संतोषी जन जहाँ धरैं धरम की राह ।
लोभरहित निजधनसुखी जिनहि न पर-परवाह ॥

चौपाई ।

सत्यबचनबकतार गरूरे । हय गोधन धन अन्नन पूरे ॥
मूढ़ न कूर न कायर कामी । जहँ न नासतिक बद बदनामी॥
बसनबिभूषनभूषित नारी । सुन्दर सीलपतिब्रतवारी ॥
कोऊ मलिन कुभोगिहु नाहीं । चन्दनचरचित अंग सदाहीं ॥
बसनबिभूषनरहित न कोऊ । दीन न दुखित न लोभी सोऊ ॥
न बरनसंकर नहिँ मतवारे । जहँ न झूठबचबोलनहारे ॥
कुटिल कुरूप न अग्य अदाता । चोर न परगुनदोषबिधाता ॥
बिमल बिप्रबर आतमज्ञानी । परम करम जपजज्ञबिधानी ॥
बीर सबल सब नर चिरजीवी । धरमधुरन्धर रहन गरीबी ॥
बिप्र बिप्रबरपूजनवारे । क्षत्रिय बिप्रभगत भुजभारे ॥
सेवक बनिक सुद्विज क्षत्रिन के । सकल शूद्र सेवक पुनि तिनके ॥
प्रबल बड़े जहँ बीर बखानै । तेजवन्त अति अगिन समानै ॥
अस्त्र शस्त्र बिद्यानि बिधि पूरे । जे न सहत अरिओज सहूरे ॥
जहँ तुरंग रँग रंगन के हैं । लाखन ललित ललित उमहे हैं ॥
बाहलीक काम्बोज बनायू । सिंधु देश जिन जनम सु पायू ॥
भद्रजात गज बिन्ध्याचल के । मन्द्रजात गय हिमगिरि थल के ॥
सुमृग जाति सह्याचल बारे । बहु मतंग मण्डित मदभारे ॥
महापदम ऐरावत अंजन । जो बामन दिग्गज मनरंजन ॥

जिनके कुल महँ उपजे जैते । सब जातन के हाथी तैते ॥
भद्र मन्द्र गज बर बहुतै हैं । भद्र मन्द्र मृग जाति जुतै हैं ॥
बहुरि जात मृग जात गनाये । पुनि मृग मन्द्रहु जात जु गाये ॥
अवध माँह द्वै जोजन ताँई । गाजत भे गजमत्त तहाँई ॥

दोहा ।

या बिधि सोभित करि नगर तिहिं रच्छन के काज ।
तँहँहि विराजत भे भलैं अतिरथि दशरथ राज ॥

इति बालकांडे षष्टमः सर्गः ॥ ६ ॥

छन्द ।

तहँ नृपति दशरथ के सुमंत्री बिजय धृष्टि जयन्त जे ।
पुनि गनि सुराष्टर राष्ट्रबर धन मंत्रपाल सुमंत्र जे ॥
त्यौंही अकोपहु आठ ऐसे मुख्य भे अति चतुरही ।
सब राजहितकारी सुमति जे बात समुझैं अनकही ॥

दोहा ।

राज पुरोहित दोय भे बामदेव सु बसिष्ट ।
यग्यकरावनहार त्यौं औरहु षट रिखि सिष्ट ॥

चौपाई ।

ऋषि सुयज्ञ कात्यायन जेहू । मुनि मृकंडु सुत कश्यप तेहू ॥
गौतम पुनि जाबालि बखानै । जे सब जानत वेद बिधानै ॥
बसु मन्त्री जे प्रथम गनाये । ते सब सचिव सकल गुन छाये ॥
आगम नीति निपुन सब साधू । धरहिँ दण्ड जहँ जसि अपराधू ॥
रीति भाँति सब की सब जानैं । चारचक्षु हित अहित पिछानैं ॥

सापराध सुतहूँ कौं दंडै । बेगुनाह अरिहू न बिहंडै ॥
देश काल सामर्थ प्रमानै । उचित दण्ड लै भरत खजानै ॥
उपजिहुं क्रोध सुइच्छित माहीं । झूठ बचन जे बोलत नाहीं ॥
रनकारन मन सहित उछाहू । करतब जान परत नहि काहू ॥
जब सुसिध्य करि काजदिखावैं । तब तिनके मत कोऊ पावैं ॥
जिनके मन्त्र न कोऊ झामी । झूठ न बादि न परतियगामी ॥
देशन दिसन प्रसिद्ध अखण्डा । सामदामबित भेद रु दण्डा ॥
प्रोहित ऋषि मन्त्रिनजुत राजा । कीन्ह प्रजापालन सुख साजा ॥

दोहा ।

बड़े बड़े राजान सौं सुकरि मिताई भूप ।
निहनि शत्रु दशरथ लसे मनहुँ इन्द्र नररूप ॥

इति बालकांडे सप्तमः सर्गः ॥ ७ ॥

छन्द ।

तहँ सुजस ऐसे नृपति दशरथ कैं न भुत एकहु भयौ ।
तब करत चिन्ता पुत्रहित हयमेध्र करिबौ ठिक ठयौ ॥
भेज्यौ बुलाइ सुमन्त्र कौं प्रोहित गुरून बुलाइवै ।
पुनि बामदेव सुयज्ञ ऋषि जाबालिहू कौं ल्याइवै ॥

दोहा ।

तब सुमंत्र के बचन तैं आये सब ऋषिराज ।
तिनहिं पूजि बोले नृपति लहि बिषाद सुतकाज ॥

चौपाई ।

सुत बिन मोह कछू सुख नाहीं । तुमहिँ बुलायहु येही ताहीं ॥

अश्वमेध हम करन बिचार्यौ । तुमहुं कहौ कछु लखि श्रुति चार्यौ ॥
यों शुभ सुनि दशरथ की बानी । बोले सकल मुनीश्वर ज्ञानी ॥
सुतहित यज्ञ यहै अब कीजै । जोरि सुसामा हयहिं तजीजै ॥
सरजू उत्तर तीर बिसाला । बनवावहु सुभ मष की शाला ॥
सुतहित सुमति भई अस यातैं । निहचै पुत्र लहहुगे तातैं ॥
सुनिमुनिबचन सुखित ह्वै राजा । बोल्यौ मन्त्रिन सौं थे काजा ॥
जे कछु कहहिं पुरोहित सामा । ते सब सिद्ध करौ इह ठामा ॥
दै सवार सँग प्रोहित रावै । छोड़ी हय्य महि पर फिरि आवै ॥
यज्ञभूमि सरजू के पारै । करहु बिघन हरि जे उपचारै ॥
बिघन भये बिन परत न पूरी । काहू नृप सौं यज्ञ सु रूरी ॥
यज्ञविघनकरता बहुते हैं । विधविहीन क्रतु अति अहिते हैं ॥
तातें जैसी बिधि मुनि भाषैं । तैसी जाइ करहु सुधि राखैं ॥
याकहिसकलसुजनमंत्रिनसौं । लै आसिष बर बिप्र मुनिन सौं ॥
नृप रानिन के महल पधारे । तहहिँ जाइ ये बचन उचारे ॥
सुतहित जग्य करहुंगो ऐसे । उत्तम होंहि तनय मम जैसे ॥

दोहा ।

यह सुनि रानिन के बदन भे प्रसन्न हरखाइ ।
ज्यों सूरज के उदय तें खिलत कमल इकहाइ ॥

इति बालकांडे अष्टमः सर्गः ॥ ८ ॥

छन्द ।

सु सुमन्त्र जानि तबै कि सुतहित जग्य करिहैं नृप बली ।
तहँ लहि इकान्त महीप सौं यह बात बोलत भौ भली ॥

इक समै सनतकुमार मुनि मोसौं भविष्य कथा कही ।
सो सुनहु चित दै आप कैं बहु पुत्र होवैंगे सही ॥

दोहा ।

कस्यपसुत सुविभांडकैं ह्वैहैं सिष्य सुश्रृंग ।
ब्रह्मचरजरत बनहि मैं बनचारिन के ढंग ॥

चौपाई ।

तपसी अगिनहवनव्रतधारी । बात न जानहिगो संसारी ॥
यौं बहु काल बितीत जु जैहैं । रोमपाद इक तब नृप ह्वैहैं ॥
अंग देश बिच राज करैंगे । राजधरम कछु चूक बरैंगे ॥
तातें बड़ो अबरषन ह्वै है । दुखित प्रजा लखि नृप अकुलैहै॥
तब नृप बहु बिप्रन बूझैगो । कछु उपाय अब याको हैगो ॥
सु सुनि कहैंगे बिप्र उपाऊ । ऋषि शृङ्गी कौं इत लै आऊ ॥
ब्याह सुकन्या ऋषि कौं दीजे । ह्वै है बहु बर्षा यह कीजे ॥
यौं सुनि नृप सुपुरोहित मन्त्री । ढिग बुलाइ बोलैगो जन्त्री ॥
ल्यावहुमुनिहिँ नृपतइमि कैहैं । सचिव न श्रापडरन तहँ जैहैं ॥
तब छलकरि गनिका ल्यावैगी । ऋषि आवत बरषा आवैगी ॥
ब्याहि तबहिँ निजकन्या देहैं । सुनृप मित्र दशरथ के ह्वैहैं ॥
रोमपाद मित्रहि के नातें । ऋषि दमाद दशरथ के तातें ॥
दशरथ अंग देश कौं जैहैं । रोमपाद सौं मिलि यह कैहैं ॥
कै तुम ऋष्यशृङ्ग कौ भेजौ । मम सँग अब यह बात अँगेजौ ॥
रोमपाद तब रिषिहिँ पठैहैं । यौं दशरथ मुनि कौं लै ऐहैं ॥
तब नृप अश्वमेध के माहीं । बरन करैंगे मुनि कौ ताहीं ॥
पुनि मुनिसुनि कामेष्टि करैहैं । चारि पुत्र दशरथ के ह्वैहैं ॥
यह भविष्य सतयुग के लागें । सनतकुमार कह्यौ मो आगें ॥

दोहा ।

ये सुनि बचन सुमंत्र सौं बोले दशरथ राइ ।
ऋष्यश्रंग कौं कौन छल गनिका ल्याई जाइ ॥

इति बालकांडे नवमः सर्गः ॥ ९ ॥

छन्द ।

तब सुनि सुदशरथ बच सुमंत्र कहै लगे पुनि वह कथा ।
छल करि तथा ऋषिश्रृङ्ग कौं गनिका लिआईहीं जथा ॥
जब रोमपाद बुलाइ मंत्रिन सौं कहत भे अब सबै ॥
तुम जाइ ऋषिहिँ लिवाइ ल्यावहु करि उपाइ यहां लगै॥

दोहा ।

तब मंत्रिन नृप सौं कह्यो याको सुनहु उपाइ ।
जातें निहचैं आइहैं बनबासी रिषिराइ ॥

चौपाई ।

रिष्यश्रृङ्ग के हैं ढँग ऐसे । बन मैं बसत बनेचर जैसे ॥
पढ़त बेद निस द्यौस सदाहीं । सुख सुभोग कछु जानत नाहीं ॥
तातें जाइ सुगनिका रूरी । सुभ सुगन्ध भूषनमनिपूरी ॥
बहु विनोदरचि रिषिहिँलुभाई । लै आवहिँगी यहहि उपाई ॥
तब समंत्रिन्टप गनिकनिहीं कौं । भे पठवत ल्यावन तपसी कौं ॥
जाइ तहां गनिकनि किय बासू । मुनिवर परनकुटी के पासू ॥
रिष्यश्रृङ्ग पितुसेवाकारी । कबहूं कहूं कढ़े ब्रतधारी ॥
को नर नागर नारी को है । नहिँ जानत जनमहुं तें जो है ॥
या बिधि रहत एकदिन आये । तहँ जहँ गनिकन गीत सुगाये ॥
तब लखि बोलीं ऋषिसौं नारी। को तुम इत कित रहत अबारी ॥

निरजन बन द्रुकलि कत डोली । करि करुना हमसौं किन बोली ॥
तब ऋषि निरषि मनोहर नारी । जानि सुमुनिगन उकत बिचारी॥
ममपितु सुमुनिबिभांडकनामा । रिष्यशृङ्ग हौं करत प्रनामा ।
ह्यातें निकट जु आश्रम मेरौ । तहँ चलि सफल करहु सुघनेरौ ॥
हौं सनमान करहुंगो आछें । गनिका सुनि जु चलीं ऋषि पाछें॥
ते सब जबहिं आश्रमहि आईं । तब ऋषि बिधिवत पूजा काईं ॥
यह पादारघ आसन येह्न । ये फल फूल क्रपा करि लेह्न ॥
यों रिषि बारबधुन सनमानी । ते सब लै रिषि आदर पानी ॥
पुनि गनिकनि ये बचन उचारे । तुमहुं खाउ फल दीन्ह हमारे ॥
ये फल हमरे आश्रम के हैं । तुम्हरे लियहिं लियावत भे हैं ॥
यों कहि सहितसनेह रिषी सौं । मिलि बहु मोदक दीन्ह खुसी सौं॥
ते लाडू फल समुझ सुहाये । बहु बिधि बहु स्वादुहि जुत पाये।
ते तब ऋषिपितु सापहि डर कौं । निकसीं सु तप बढानें कर कौं ॥
तब मुनि गनिकनि के जु गये पै । दुखित भये हित मिलि बिछुरे पै॥
पुनि मुनि दिन दूजें तहँ आये । जहँ गनि गनकन के लखि पाये॥
आवत लखि रिषिकों ते नारी । ह्वै सनमुख ये बचन उचारी ॥
चलहु सुअब आश्रमहिं हमारे । जहँ बिचित्र फल मूल सिधारे ॥
यह सुनिमुनि किय गमनकबूलै । तबहिं लिआई गंगा कूलै ॥
तहहिं नाव पर राख ऋषीकौं । अंग देश ल्याई तपसी कौं ॥
आवत मुनिहि इन्द्र जल बरषे । रोमपाद पुनि सुनि हिय हरषे ॥
ऋषिहिआइसनमुखचलिलीन्हौ। अति आदर पूजन बहु कीन्हौ ॥
माग्यौ बर लखिरिषिहिअकोपै। तुव पितु कोप करैहिगे मोपै ॥
या कहि नृपत जाइ रनवासै । सान्ता नाम सुता जहँ भासै ॥

दोहा ।

रोमपाद लै निज सुता दीन्ही रिषिहिं बिबाह ।
रिष्यश्रृंग संता सहित तहँहि बसे चित चाह ॥

इति बालकांडे दशमः सर्गः ॥ १० ॥

छन्द ।

या कहि कथा दशरत्थ सो सुसुमंत्र फिर भाषत भये ।
कै अबहि चलि रिषिशृङ्ग कौं ल्यावहु सुआदर कर नये ॥
यौं मुनि महीप सुमंत्रबच सुबसिष्ट को संमत लियो ।
लै सँग सुरानिन नृप पयान सु अंगदेशहि कौं कियौ ॥

दोहा ।

तहँ उलंघि बहु बन नदी अंगै पहुचे जाइ ।
सुतप तेज मूरत मुनहिं लखत भये हरखाइ ॥

चौपाई ।

तहहिं मिले नृप अंगपती सौं । रोमपाद बोले सु मुनी सौं ॥
कैये नृप दशरथ सख मेरे । प्रानन तें प्रियबंधु घनेरे ॥
तब मुनि नृप दशरथ सनमानै । दशरथ पुनि मुनिपूजन ठानै ॥
यौं बसु दिवस भये सुख साखे । रोमपाद सौं तब नृप भाखे ॥
मम पुर कौं भेजहु रिषिराजै । सान्ता जुत जु हमहिँ सुखसाजै ॥
एवमस्तु कहि रिषि सौं बोले । रोमपादनृपबचन अडोले ॥
आपु सभारज दशरथ संगै । जाहु अवधि कहँ उदित उमंगै ॥
सु सुनि चलत भे ऋषिजुतनारी । दशरथ संग जगतहितकारी ॥

तब दशरथ मिल सुनृप सखासैं । लै आयस चल भे निज बासैं ॥
भे भेजत तबहीं हलकारे । जाइ सजावहु पुर पुर द्वारे ॥
सुमुनि नृपति पहुँचे तिन पाछैं । बहु बाजन बजवावत आछैं ॥

दोहा ।

महलन मैं सांतहि निरखि सुखी भयो रनवास ।
रिष्यश्रंग तहँ कछुक दिन करत भये सुखवास ॥

इति बालकांडे एकादशमो सर्गः ॥ ११ ॥

छन्द ।

इमि बहुत दिन बीतैं बसन्त बिलोकि नृप ऋषिशृङ्ग सौं ।
बोले बचन सुतहित करहुँगो अश्वमेध उमंग सौं ॥
ताके लियें यह बरन है पहिलैं सुआपुहि लीजिये ।
सु कबूल करि ऋषि कहत भे सामा सकल सिध कीजिये॥

दोहा ।

तब दशरथ्थ सुमंत्र सौं कह्यौ कि सबहुन ल्याउ ।
रिषि मुनि गुरु प्रोहितन लै सामां सिद्ध कराउ ॥

चौपाई ।

तब सुमंत्रबच काश्यप आये । बामदेव जाबालि सुहाये ॥
पुनि सुयज्ञ सुबशिष्टहु आदी । तिनहिँ भूप बैठारि सुगादी ॥
बिधिवत पूजि बहुत सनमानैं । बोले बचन सुमख के लानैं ॥
तब बशिष्ट सरजू के पारै । करि सामग्री सिद्ध अपारै ॥
तहहिँ यज्ञमन्दिर बनवायौ । अश्वमेध संकलप करायौ ॥

दोहा ।

छोड्यो हय हय रच्छिवे सँग सवार सै चार ।
भेजत भे हित होम के प्रोहित उदित उदार ॥

इति बालकांडे द्वादशः सर्गः ॥ १२ ॥

छन्द ।

इमि छोड़ि अश्वहिँ बरष भरि पुनि भूप दीच्छहि मै रहे ।
जब फेर आवत भौ बसन्त बशिष्ट सौं ये बच कहे ॥
ज्यों बिघन होइ न यज्ञ में ततबीर तुम तैसी करौ । ।
गुरु हौ पुरोहित हित सु यातैं भार यह सिर पर धरौ ॥

दोहा ।

तब बसिष्ट सुकबूल करि लीन्हे बिप्र बुलाय ।
धरम करम मारग बिषैं जे पटु मन बच काय ॥

चौपाई ।

बहुश्रुत श्रुतश्रुत आगमज्ञाता । जनमजोतिसी चित्रबिधाता ॥
बहु गनिका गायक बहु जाती । बेलदार बहु भील सुखाती ॥
चरमकार बहु कारीगरहू । कुम्भकार लखि ऋषि उच्चरहू ॥
अगनित ठीठन काठ पाषाना । ल्याय रचहु क्रत हित सुभथाना॥
राजभवन पुनि रानिनहू के । अमित गेह बिप्रन के नीके ॥
ते बनाय बहु अन्ननि भरऊ । पुरबासिनहित मन्दिर करऊ ॥
देश देश के भूपति ऐहैं । तिनहित भवन रचहु जहँ रैहैं॥
तिनके हय हाथिनहित सालैं । राजभटनहित मन्दिर मालैं ॥

सयनभवन पुनि पाकनिकेतू । रचि राखहु सामान समेतू ॥
द्यौ अन्नहि कोऊ अब ऐसैं । करि आदर तजि क्रोध जु तैसैं ।
कोऊ कहुं न निरादर पावै । जातैं सबहु सबै सुख गावै ॥
दान देत जहँ करि अपमानैं । सो वह दान बिघन बहु ठानैं ।
तातें करि अपमान रु हासैं । दीजै दान न पुनि गहि गासैं ॥
करि सनमान जु सहित सनेह्न । या बिधि दान याचकन देह्न ॥
यज्ञकरम काजहि जे लागे । दुज खाती कारीगर पागे ॥
रहहु विशेष तिनहिँ सनमानैं । दै भोजन धन बसन सु पानैं ॥
सुनि मुनिबचन सबै मिल भाषे । जे जिहिँ काज करम हित राखे ॥
जो कछु आप कह्यौ सो ह्वैहै । घाट नेक कछु होन न पैहै ॥

दोहा ।

ये सब के सुनि मुनिबचन बहुरि सुमंत बुलाइ ।
बोलत भये बसिष्ट तहँ मंत्री सौं सुख पाइ ॥

चौपाई ।

देश देश के द्विज अरु क्षत्री । राजा राउ जहाँ जे अत्री ॥
बनिक शुद्र सनमानि बुलावहु । दै सुनिमन्त्रन चार पठावहु ॥
पुनि मैथिलपति जनक बिदेहै । काशिराज कौशलपति तेहै ॥
सुनृप ससुर कैकयपति जो है । रोमपाद दशरथसख सो है ॥
इनहिँजाइनिजडीलनल्यावहु । करि आदर ये और बुलावहु ॥
पूरबदेशपती मगधेशै । सिंधु देश सौं बीर नरेशै ॥
त्यौं सौराष्टर देश महीपै । दच्छिण दिश नृप जे कुलदीपै ॥
और जहां जे हैं महिचाता । तिनहिँ बुलावहु भेज सुभ्राता ॥
ते सब कुटुम समेत जु आवैं । जातैं नृप दशरथ सुख पावैं ॥

दोहा ।

ये मुनिबचन सुमंत्र सुनि कहुँ भेजत भो दूत ।
कहुँ प्रधान कहुं बंधुनिज कहूँ भ्राता कहुं पूत ॥

चौपाई ।

कहुं सुजाइ आपुहि कवि छायो । बहु महिपाल बुलाइ सुभायो॥
तबहिँ कामकाजी मुनि पाहीं । आइ कहत भे बच इकठाहीं ॥
सामा सकल सुसिध हम कीन्ही । जाविधिआयसुमुखकहिदीन्ही ॥
सुनिमुनि पुनि तिनसों यह भाषे । देहु सबनि भोजन अभिलाषे ॥
बिमुख न जाइ कबहुं कहुं कोऊ । जु कछु जु मागहि दीजहु सोऊ॥
याबिधि करत कछुक दिनताईं । आवत भे नृप सकल तहांईं ॥
निज निज देशन के जे आछे । हय गय रतन बिभूषन बाछे ॥
ते सब लियहिँ नजरि के काजैं । आवत भे सकुटुम्ब समाजैं ॥
तब बसिष्ट दशरथ सों भाषे । आये सकल नृपति अभिलाषे ॥
तिनकों अति आदर मिहिमानी । बिबिधभाँति किय लै अगवानी॥
सरंजाम अब सब है सिद्धै । कीजे यज्ञ निरषि निज रिद्धै ॥
तब दशरथ सुमुहूरत लैकैं । सँग रिषिशृङ्ग बशिष्टहि कै कैं ।

दोहा ।

आवत भे सुनछत्र में यज्ञभवन मे जाइ ।
दिक्षा में बैठत भये सपतनीक सुख पाइ ॥

इति बालकांडे त्रयोदश: सर्ग: ॥ १३ ॥

छन्द ।

ताही समय भ्रभ सकल भूतल एक बरसहि मैं भलैं ॥
सो अश्व आवत भौ तबहिँ तहँ यज्ञशाला के थलैं ॥
तब तीर सरजू के प्रगट प्रारंभ यज्ञहि कौ भयौ ॥
रिषिशृङ्ग आदिक सोरहू रित्विजनि सुसुकारज ठयौ ॥

दोहा ।

प्रोहित गुरु निज अचारज रित्विज उद्‌गा तानि ।
और सबनि मिलि नृपति कौं यज्ञ करायौ आनि ॥

चौपाई ।

जो कछु यज्ञबिधि बेदन गाई । ताही विधिविधि रिषिन कराई॥
सुबरनबेदी पुरुष अदंभे । रतननजटित सुमष के खंभे ॥
सुधुज पताकहु बन्दनबारे । बरषत सुमन सुमन सुख भारे ॥
दै नभदुन्दुभि देव सुहाये । यज्ञभाग सबहुन मिलि पाये ॥
होम धूम धारन की धारैं । छाई नभमण्डल सु अपारैं ॥
बिदुवन बेद सुमंत्र उचारे । सहित स्वरन सुखदायक भारे ॥
धुनि गन चहुं बेदन के छाये । सुनि सुनि सबहुनि के मनभाये॥
पण्डित करत भये कहुं चर्चा । दशरथ सबहुन की किय अर्चा ॥
सबनि बिभूषन बसनबिसाला । देत भये इक इक तें आला ॥
जपी जोतिषी आदिक जेते । पाठक पुरुष पुरानिक तेते ॥
दशरथराज सबनि सनमानैं । दीन्हैं खोलि तिन्हैं सुख जानै ॥
जाके जो मन आवै सोऊ । लेहु लेहु बरजत नहिँ कोऊ ॥
नृप सनमान सुदानकहानी । गावत भे सु सबै मिलि प्रानी ॥
गायक गनिकनि मंगल गाये । बीना मधुर मृदंग बजाये ॥

बन्दीजन चारन जस बोले । रचि रचि गीत कवित अनमोले ॥
और याचकन की जे फौजें । तिन पाई मुखमांगी मौजें ॥
परवतवत अन्नन की ढेरैं । बहु पकवान कोट बहु फेरैं ॥
खीर खाँड़ भव भाँति मिठाई । मेवा मधुर सबनि मिलि खाई ॥
इच्छाभोजन पाये सबहूं । जैसे कहँहु न खाये कबहूं ॥
जब तें नृपति यज्ञ अनुसाय्यौ । तब तैं येही बचन उचार्य्यौ ॥
देहु याचकन देहु जु देह्र । अन्न बसन भूषन धन गेह्र ॥
देहु देहु याही धुनि छाई । दूजी बात न परत सुनाई ॥
बिप्र गरीब बिरध नर नारी । बालक तरुन अनाथ भिखारी ॥
अन्ध पंगु रोगी सन्यासी । स्वामी साधु जिते जगवासी ॥
तिनहिंसबनिभोजनमनमानै । देइ सुबसन बहुत सनमानै ॥
ऋगबेदी रित्विज़ हो ताकौं । देत भये पूरव सु दिशा कौं ॥
जजुरबेदि रित्विज अद्वरजे । दीन्ही दिश पच्छिम बेगरजे ॥
सामबेदि रित्विज उदगाता । ताहि दीन्हि उत्तर दिसि दाता ॥
अथरबनी रित्विज ब्रह्मा कों । दच्छिण दिशि तहँ दीन्ही ताकौं ॥
याबिधि दै दच्छिननि नरेशा । अश्वमेध पूरन किय वेसा ॥
सुकरि यज्ञ हरषित भे राजा । बोलै तब रित्विज सु अवाजा ॥
भूमि न यह हमसों सम्हरैगी । रच्छ न सकत तुमहिं कौ ह्वैगी ॥
पढ़त बेद पूजहि सन्ध्या मैं । बीतत दिवस रजनि सब जामैं ॥
तातें हेम रतन बहु देऊ । ता बदलैं हमसौं महि लेऊ ॥
सुनि दशरथ दस लाख सुगाई । सौ करोर मुहरैं मगवाई ॥
सौ करोर तहँ रजत रुपैया । देत भये रित्विजनि दिवैया ॥
तब सुमोरह्र रित्विज भारे । लेत भये करि बाँट मुखारे ॥

ह्वै प्रसन्न आशिष बहु दीन्हे । ते आशिष नृप सिर धरि लीन्हे ॥
पुनि करोर मुहरन की कीन्ही । नृपति भूरि सो बाँटि सु दीन्ही ॥
पुनि जाच्यौ द्विज एक दुखारी । ताहि सु भूषन दीन्ह उतारी ॥
करि प्रनाम प्रति बिप्रनि नीके । लेत भये आशिष सबही के ॥
बहुरि सुरिषिशृङ्गहि सों भाषे । सुतहित करहु इष्ट अभिलाषे ॥

दोहा ।

सुनि मुनि बोले करहुँगो सुभ सुतेष्टि सुविचारि ।
जाहि किये नृप आपकें पुत्र होंहिगे चारि ॥

इति बालकांडे चतुर्दशः सर्गः ॥ १४ ॥

छन्द ।

यों कहि सुदशरथ सों सुतबहित इष्ट मुनि करतें भये ॥
बिधिवत अथर्बन बेद के पढ़ि मंत्र हवि होमत हये ॥
तब देवता गन्धरब सब हयमेध के हविभाग सों ॥
ह्वै तृपित ब्रह्मा सों कहत भे बचन अति अनुराग सों ॥

दोहा ।

हे विधि तुव बरदान सों है रावन सुअबध्य ।
सुरनर किन्नर मुनिन दुख देत सदा जग मध्य ॥

चौपाई ।

जासन मुख रवि तपतहु नाहीं । चलत न वायु समुद्र बिकलाहीं ॥
तातें अब उद्योग सु कीजे । जातें मरहि सुखल सब जीजे ॥
यों सुनि तबहिं सुरन की बानी । या बिधि बिधि बोले बरदानी ॥
तिहिं रावन बर मांगत ताहीं । नाम मनुज को लीन्हिस नाहीं ॥

तातैं वह मरिहै मनुजैं सौ । यह उपाइ इक और न एसौ ॥
या बिधि सबनि बिचारत माहीं । आवत भे हरि तुरित तहांहीं ॥
आयुध चारि चहूं करि लीन्हें । पीत बसन थिति खग पर कीन्हें ॥
निरखिसुबिधिसन्मुखचलिआये । कै नुति प्रणति तबहिँ बैठाये ॥
पुनि बोले हरि सौं सु बिधाता । हौ तुम तिहुंलोकन के त्राता ॥
तातैं सकल लोकहितहेतू । लीजे अब अवतारं सु चेतू ॥
मानि बचन मम येही कीजे । कहत पुकार सकल सुनि लीजे ॥
अवधनाथ नृप दशरथ राजा । ज्यौं ऋषिराज रहत त्यौं छाजा ॥
ताकैं तीन तहहिँ पटरानी । जे जातीं जग अग्र बखानी ॥
तहँ तुम निज रचि चारिबिभागे । प्रगटहु धरि नर रूप सु जागे ॥
जो काहू सौं मरत न मारौ । तिहिँरावनकहँ सुमहिँ सँघारौ ॥
सुनि बिधिबच हरि बचन उचारे । अब तुम सब मिलिहोहु सुखारे ॥
कुटुमसहित रावनरिपु हनिहौं । ग्यारह सहस बरष नृप बनिहौं ॥
या कहि किय अवतरन बिचारू । लेहु सुदशरथगृहअवतारू ॥

दोहा ।

यह बिचार सुर समुझि तब बोले बचन अकुंठ ।
हनि रावन जग रक्षि प्रभु पुनि ऐबी बैकुंठ ॥

इति बालकांडे पंचदशमः सर्गः ॥ १५ ॥

छन्द ।

तब यदपि प्रभु सरबज्ञ जानत सकल कर्म सु निर्मये ।
हरि तदपि अज आदिक सुरान उपाय सो बूझत भये ॥

अब कहहु कौन प्रकार रिपुरावन सँघारहुँ जाइ कैं ।
तब तहँहिँ ते सब देवता, बोलत भये हरषाइ कैं ॥

दोहा ।

धारि धारि बानरबपुष हम करिहैं सुसहाइ ।
आपु मनुजअवतार लै हनियै रावन जाइ ॥

चौपाई ।

तब हरि हरषि कह्यौ बच ये है । दशरथसुतहित इष्ट करे है ॥
हौं अवतार धरत गृह तैंही । या कहि अन्तर्ध्यान भयेही ॥
तब ऋषिशृङ्गहि हविषहुतैंहीं । प्रगट्यौ सुपुरुष एक तितैंहीं ॥
स्यामबरन पट अरुन बिभारैं । रवि सम तेज सुलच्छन धारैं ॥
खीर लियें भरि सुबरन थारी । रजतपोस तिहिँ ढाकि सुधारी ॥
बोल्यौ लै कर दुहुन उठाई । सुनि दशरथ मम बात सुहाई ॥
हौं विधि कै भेजें दूत आयौ । नृपहु कह्यौ आवहु सुख पायौ ॥
अरघ यहै यह आसन लीजे । करहुँ सु जो कछु आज्ञा कीजे ॥
बोल्यो तब वह पुरुष सु बानी । तुम सुरपांति बहुत सनमानी ॥
ताकौ अब तुम यह फल लेहू । भेज्यौ सुर निज सहित सनेहू ॥
सुरनि प्रसाद खीर पठवाई । लै रानिन कहँ देहु खवाई ॥
तातैं तनय तिहारे ह्वैहैं । तिनके जस दिशिबिदिशनिछ्वैहैं॥
तब नृप हरषि प्रसाद सुहायौ । करि प्रनाम निज सीस चढ़ायो ॥
करि परिकरमा अगिन अनूपै । दशरथ भी कछु औरहि रूपै ॥
ज्यौं निरधन बहु धन कै पायें । यौं नृप हरषि लह्यौ तिहिँ ठायें॥
अन्तरध्यान पुरुष वह भयऊ । तब नृप निज रनिवासहि गयऊ॥
बोले सुन कौशिल्या रानी । खीर सु सुतहित लेहु जु आनी ॥

या कहि कौशिल्यहि वह आधी । देत भये नृप खीर सुधाधी ॥
आधिहुं मैं पुनि आधी करिकैं । दीन्हि सुमित्रहिँ अतिहितभरिकैं ॥
पुनि आधी कर चौथाही मैं । दिये कयकेई कहँ ताही मैं ॥
बाकी पुनि सु सुमित्रहि दीन्हीं । तिहुन खीर वह भोजन कीन्हीं ॥

दोहा ।

कछुक दिनन मैं तीनहूं रानी गर्भनि धारि ।
भईं सुसोभित नृपहु भे हरिषत तिनहिं निहारि ॥

इति श्रीबालकांडे षोड़शः सर्गः ॥ १६ ॥

छन्द ।

भगवान जब दशरत्थ नृप रानीन के गर्भहिँ गये ।
तबहीं विरंच सुदेवतन सौं बात यह बोलत भये ॥
तुम हरि सहायहि के लियें उतपत्ति कपिगन की करौ ।
अब अति बली अतिकाय कामग कामरूपी बिस्तरौ ॥

दोहा ।

बुद्धिमान नीतिज्ञ कपि मायावी सुज्ञान ।
अस्त्रसस्त्रविद्यानिपुन गतिमें वांयु समान ॥

चौपाई ।

सुभ ऽपसरा गन्धरबिन माँहीं । विद्याधरिनि किन्नरिनि ठाँहीं ॥
यक्षनीनि नगपतिनिनही मै । रचहु सृष्टि कपिमय पृथिवी मै ॥
मम मुख तें इक लेत जम्हाई । निसरयौ सब रिच्छन कौ राई ॥
जामवन्त बलवन्त सु जानौ । सृष्टि सु निजनिज तुमहूं ठानौ ॥

इन्द्र तबहिँ बाली कपिराजा । रवि सुग्रीव महाबलछाजा ॥
बिरसपतिहु कपि तारक नामा । धनद गन्धमादन अभिरामा ॥
बिसकर्मा नल पावक नीले । मैंदु दुविद सुरबैद सुसीले ॥
बरुन सुखेन सस्त परजन्यहु । मारुत हनुमानहिँ उतपन्यहु ॥
या बिधि निज निज तेज बिराई । रूप पराक्रम सुति अधिकाई ॥
दै दै सृजत भये सुकपीसा । रावन बधहित सब सुर ईसा ॥
बहुत रीछ बानर सु लँगूरे । अगिनित सृजत भये बलपूरे ॥
सिंहसरिस सब कपि अभिमानी । गिरि आयुधनि धरत निजपानी॥
दन्तडाढनखआयुधधारी । तरु परबत गहि लेत उखारी ॥
सातहु समुद उलंघनवारे । उड़त अकाश मगहिँ मग भारे॥
भूमि बिदारि पतालहुं जाहीं । डरत न कालहु तें मनमाहीं ॥
नभ मेघनि निजकर गहि लेहीं । नादि सु नभचारिन पटकैहीं ॥
दौरत मत्त गयन गहि राखैं । जिनके बल नहिँ आवत भाखैं॥
या बिधि के कपि रिच्छ सुहाये । निरझर बन गिरि गुहगुह छाये॥
तहँ सब बनचारिन के राई । बालि सुकण्ठ भये दुहु भाई ॥
नल अरु नील सहित हनुमाने । तिनके मंत्री मुख्य बखाने ॥

दोहा ।

ऐसे रीछ कपीन सौं भरे दीपहू सात ।
केवल रामसहाय कौं जे उपजे धरि गात ॥

इति बालकांडे सप्तदशः सर्गः ॥ १७ ॥

छन्द ।

इमि नृपति दशरथ यज्ञ करि सोभित सकल राजान कौं ।
सनमानि अति भेजत भये निज निजि सुदिशि देशान कौं ॥
पुनि ऋष्यशृङ्गादिक सकल मुनि विप्र निज संगहि लियें ।
आये अजुध्याधिप अवधपुर मांहि अति हर्षित हियें ॥

दोहा ।

तहां पूजि मुनि बिप्रगन विदा किये सिर नाइ ।
यों कृतकारज ह्वै नृपति बैठे महलन आइ ॥

चौपाई ।

तहँ यह हेरत बाट नरेसू । लैहैं कब सुत जनम सुबेसू ॥
यों तब यज्ञ समापतही तें । बिधिवत बारह मास बितीतें ॥

छन्द ।

शुभ चैत मास प्रकाश नवमी दिन पुनरबसु नखत मैं ।
गुरु शुक्र शनि रवि कुज परे ह्वै उच्च सदननि सुभतमैं ॥
गुरुचन्द्रयुत कर्कहि लगन अभिजित मुहूरत जा समैं ।
अति उदित कौशिल्या उदर तें अवतरे प्रभु ता समैं ॥

चौपाई ।

जे इक तिहुलोकन के स्वामी । सब गुनजुगत गरुड़ के गामी ॥
हनन दशानन कृतबहुपीरा । प्रगटे प्रभु धरि मनुज शरीरा ॥

छन्द ।

तहँ दूसरे दिन नखत पुष्य सुलग्न मीनहिँ के समैं ।
भे कैकयी तें भरत परगट निपट मंजु मनोरमैं ॥

जगविदित अशलेषा नखत शुभ करकै लगनहि कै उगें ।
सोभित सुमित्रा तें सु लक्ष्मन शत्रुघन जनमैं जुगें ॥

चौपाई ।

यों नृप दशरथगृह सुत चारी । प्रगटे परम पुरुष सुखकारी ॥
तब गन्धरबबधू शुभ जेतीं । करि करि गान नचीं सब तेतीं ॥

छन्द ।

तहँ देत दिवि दुन्दुभि सकल सुरगन सुमन बर्षत भये ।
घर घर अवधपुर के सु नर नारीनि कर हरषत भये ॥
भरि गे बिभूषित राजमग बहु नट निरतकारीन सौं ।
तहँ इकैं गावत इकैं नाचत गति बजावत बीन सौं ॥

चौपाई ।

बन्दीजन चारन छबि छाये । भे गावत जस कबित बधाये ॥
भूषन असन बसन गज घोड़े । दीन्हि तिनहिं नृप कंचन तोड़े ॥

छन्द ।

पुनि पूजि द्विजगन भूपमनि मनि रतन गो-गन देत भे ।
सनिमानि सबनि प्रनाम करि दशरथ सुआसिष लेत भे ॥
या बिधि करत नित नई मौजनि शुभ दिवस द्वादश गये ।
तब ते रहैं दिन नाम करन बिधान करि करितैं भये ॥

चौपाई ।

तब बशिष्ट शुभ नाम बिचारे । बन्धु चहुँन के न्यारे न्यारे ॥
सबनि सुनाइ मुदित मुनि बोले । निरमल नाम जथारथ खोले ॥

छन्द ।

अब प्रथम कौशिल्यातनय कौ नाम शुभ श्रीराम है ।

पुनि कैकयीसुत कौं भरत यह नाम अति अभिराम है॥
पुनि त्यौं सुमित्रातनय लछमन शत्रुघन नामा भले ।
इमि नाम चारहु सुनि सबै मिलि भे कहत अति निर्मले ॥

चौपाई ।

कर इमि नामकरन नृप आछैं । दिय भोजन बिप्रनि ता पाछैं ॥
रतन बसन बहु गौवन देकैं । बैठे नृपति कृतारथ ह्वै कैं ॥

दोहा ।

कछु दिन बीतें चारिहू बंधु पाइ परगास ।
आये सब मिलि खेलिवे पितु दशरथ के पास ॥

बिष्णुपद ।

बिराजे चारिहू भाई । नृपति दशरथ ढिग आई ॥
हँसत हुलसत लसत आछैं । इकैं बिधि काछ सब काछैं ॥
गगनतन राम रँग रूरे । बिभूषित भरत गुनपूरे ॥
सु लछमन सुमनमनहारी । सुमुख शत्रुघ्न सुखकारी ॥
मुखन उकसीं दुदो दतियाँ । करत कछु तोतली बतियाँ ॥
लटूरी सुभ सिरनि छूटीं । सुमन मुकतानहीं जूटीं ॥
सुदीरघ दृगनि मैं कजरा । परे पुनि गरनि मैं गजरा ॥
कटिन कल किङ्किनी राजैं । मधुर मृदु मन्दही बाजैं ॥
पहुँचीं करन मैं जैसी । पगनि बिच पैजनी तैसी ॥
घुटैयन चलत चुप चोरैं । चिरैयन चाहि चहुंओरैं ॥
तबहिँ फिर फरस पर आवैं । जबहिँ नृप जाइ गहि ल्यावैं ॥
सु इक चढ़ि कन्ध पर कूदैं । सु इक नृप नैनहीं मूदैं ॥

सु इक गहि बाँह झकझोरें । सु इक मनिमालही तोरें ॥
कबहूँ कछु माँगि मचलेहीं । हरषि पुनि नृपहि सुख देहीं ॥
सुइहि बिधि करत बहुलीला । बिलोकति मातु कौशीला ॥
सुमनगन सुमन बरसावैं । सु पद्माकर चरित गावैं ॥

या बिधि कछु दिन बिते पर पाइ वैस कौमार ।
सबगुनपूरनराम भे सुपढ़ि वेदहू चार ॥

चौपाई ।

सकललोकहितकरता तैसे । ज्ञानवान बुधिमान सु वैसे ॥
हय हाथी रथ चढ़िबे माहीं । निपटनिपुणसुचिसुभगसदाहीं॥
धनुरवेद बितसर धनुधारी । तिनसमानकिहिंकहहुउचारी ॥
तहँ लछमन निज बालपनें ते । भे रामहिं हित चित अपनें ते ॥
खात पियत सोवत कहुं नाहीं । बिन रामहिं लछमन सु सदाहीं ॥
राम जात जब कबहुं सिकारें । तजहिं न संग लषन धनु धारें ॥
यौंही भरत भगत सत्रुघ्नें । होत भये हित तन मन बचनें ॥
ऐसे निरखि कुमारनि राजा । किय बिचार व्याहहिं के काजा ॥
बोलि बसिष्टहिं करत बिचारू । द्वारपाल तहँ आयउ चारू ॥
विश्वामित्र महामुनि आये । आपु दरस हित द्वारहिं छाये ॥
सुनि नृप जुत प्रोहित चल आगें । लेत भये मुनि कहँ अनुरागें ॥
दै करि अरघ आचमन ल्याये । अति आदरि आसन बैठाये ॥
तब मुनिकौशिकलखिनृपनयऊ । कुशल प्रश्न बहु बूझत भयऊ ॥
नृप तुव ज्ञाति सुहृत गृहमांहीं । कै हय हाथिन कुशल सदाहीं ॥
बूझि बशिष्टहि सौं कुशलातैं । बामदेव आदिक मुनि यातैं ॥
निरषि तिनहु सौं बूझी त्यौंही । बहु कुशलाति नजरि करि सौंही॥

तब दशरथ कर जोरि सु तैसे । बोलि मुनि कौशिक पहँ ऐसे ॥
आपु आगमन यह मुनिराई । या विधि हमहिँ भयौ सुखदाई॥
अमृतलाभ जिमि बिन घनपानी। ज्यों लहि पुत्र अपुत्र जु प्रानी ॥
बिगतवस्तु पांबे सुख ज्योंही । भयहु सुदिन यह मेरौ त्योंही ॥
जीवन जनम सफल कर लेखे । जब तैं चरन अपुन के देखे ॥
आपु सरिस बिय को तपकारी । नृप तैं भयहु राजऋषि भारी ॥
तापर बहुरि तपस्या कीन्हीं । बिदित ब्रह्मऋषिपदबी लीन्हीं ॥
यातैं उचित जु तुम्हरी पूजा । हमकौं तुम सम को अब दूजा ॥
कीन्ह सफल अब यह मम गेह्न। करहु हुकम कछु तजि सन्देह्न ॥
जो कछु आप कहहिँ सुकरूंगौ। कबहुं बचन तें हौं न टरूंगौ ॥
आप परम दैवत हमरे हौ । आपुहि कौ मम तन धन गेहौ ॥

दोहा ।

या विधि दशरथ के बचन सुनि मुनि विश्वामित्र ।
व्है हरषित बोले तबै नृप सों बचन विचित्र ॥

इति श्री बालकांडे अष्टादशमः सर्गः ॥ १८ ॥

छन्द ।

हे नृपति दशरथ बचन ऐसे तुमहिँ कहिबे जोग हैं ।
जिनके समीप बशिष्ट से मुनि सिष्ट रहत सुयोग हैं ॥
अब हौं कहत कछु काज निज सो सुनत निहचैं मानिवी ।
मष नियम सौं चाहत कियौ तहँ बिघनकर है जानिवी ॥

दोहा ।

इक मारीच सुबाहु पुनि, प्रबल निसाचर दोइ ।
करत जग्य विध्वंस मम इच्छारूपी होइ ॥

चौपाई ।

जबहीं करत सुयज्ञ सुरू मैं । बरसत मास रुधिर मख-भू मैं ॥
तब मैं छोड़ि नियम मख जागा । भाजि चलहुँ, सनमति अनुरागा॥
उपजत क्रोध न अब सपनैंहूं । तातैं देत न शाप घनैंहूं ॥
यातैं राम सुभग सँग मेरे । भेजौ अबहिँ समर्थ घनेरे ॥
ये हनिहैं जु निशाचर दोऊ । राम सुजस कहिहैं सब कोऊ ॥
देहु इनहिँ अब बिलम न कीजे । तजि सुतनेह जगति जस लीजे॥
हौं पन करत राम हनिहैंगे । सकल निशाचर जे बन हैंगे ॥
हौं बशिष्ट मुनि और मुनीशा । जानत रामप्रभाव महीशा ॥
देहु सुतहि दिन दसही काजैं । बूझि बसिष्टहिँ मन्त्रिसमाजैं ॥
धरमअरथजुत कहि बच ऐसे । भे तहँ चुप कौशिकमुनि तैसे ॥

दोहा ।

ये मुनिबच सुनतैं नृपति रहे मूरछा खाइ ।
पुनि सचेत व्है छिनक मैं बोले दशरथ राइ ॥

इति श्री बालकांडे एकोनविंशतिः सर्गः ॥ १९ ॥

छन्द ।

यह कहत भे दशरथ सु नृप ऋषिराज बिश्वामित्र सौं ॥
यह रामबालक बरस बारह कौ अबोध चरित्र सौं ॥
सुत अति अबल रिपु सबल यातैं अबहिँ ऐसी करहुँगौ॥
अछौहिनी दल कौ धनी हौं रच्छसन सौं लरहुँगौ ॥

दोहा ।

चलि कीजे मख सुचित व्है हौं व्हैहौं रखवार ।
अपने जियत रिपून पै सकहुँ न भेजि कुमार ॥

चौपाई ।

रामकुमार लखहु अब ताहीं । युद्ध बलाबल समुझत नाहीं ॥
पठ्यहु न कछु न प्रयास कियौई। अब लगि धनुष न बान लियौई॥
रनमैं चतुर न भे भुजभारी । कपटकरमकरता निसिचारी ॥
हौं न जियहुं बिन राम सु कैहूं । तजहुं न रामहिं प्रान तजैहूं ॥
यद्दपि चार सुत सुभग हमारे । तद्दपि राम प्रानन तें प्यारे ॥
आठ हजार बरस वय खोई । तब बर लहि यह सन्तति जोई ॥
तातें राम दीये क्यौं जाहीं । घर सिवाय पर जानत नाहीं ॥
तुम जु रामहीं इक तजबीजे । तो हम सबनि सुसंगहि लीजे ॥
हम सब रामसहित धनुधारी । करिहैं ऋषि तुव मष-रखवारी ॥
कहहु कौन वे राक्षस दोऊ । किहिं बिधि रूप पराक्रम सोऊ॥
किनके सुत पुनि किन पठवाये । मारे जाहिँ कवन बिधि धाये ॥
रक्षस होत महामायावी । तिनसों बिजय कवनबिधि पावी॥
या बिधि सुनि दशरथ की बानी । कौशिकमुनि सब कथा बखानी॥
ऋषिपुलस्त्यकुलमैं बलधामा । है रक्षस इक रावन नामा ॥
वह बिरंचिमुख तें बर पाई । भयहु सु तिहुंलोकनिदुखदाई ॥
सो ऋषिमुख मषनासन काजें । भेजत निशिचरनिकरसमाजें ॥
तिहिं सुबाहु मारीच जु ये हैं । मम मषनासनहित पठये हैं ॥
प्रबल सुन्द उपसुन्द जु गाये । तिनके तनय दुहूं ये धाये ॥
प्रबल कामरूपी मायावी । अतिकराल दुतिदेह न भावी ॥
ते इक रामहिँ सों जु मरैंगे । तुम सबके टारिहुं न टरैंगे ॥
तातैं इक रामहिँ कौं दीजै । और बिचार न कछु अब कीजै॥
सुनि मुनिबचन नृपति पुनि बोले। प्रथम दशानन के गुन खोले ॥

जो रावन सुरअसुरबिजेता । ता सनमुख नर कौं बल कैता ॥
तिहिँ जो दोऊ दुष्ट पठाये । तिनके करम सु आपुहिँ गाये ॥
तातैं तिनसौं युद्ध करैं कौं । देंहु न रामहिँ वृथहि मरै कौं ॥
रामसहित मुहि चलहु लिवाई । हौं करिहौं तिनसौं सुलराई ॥

दोहा ।

या बिधि दशरथ के बचन सुनि कौशिक मुनिराइ ।
व्है सकोप बोलत भये होइ कहा धौं हाइ ॥

इति श्रीबालकांडे विंशतिः सर्गः ॥ २० ॥

छन्द ।

सुनु सत्यसंधि महीप दशरथ तुमहिँ यह नहिँ चाहिये ।
ऊँ हारि मोसौं बचन आगैं तौन अब निरबाहिये ॥
रघुवंश में अब लौं न नृप तोसौं असतबादो भयौ ।
लै अजस ह्वै बस मोह के निज धुन जु पन सो तजि दियौ ॥

दोहा ।

जो कछु रुचै सो तुम करौ हमरौ कहा नसात ।
सुखी रहौ हमहूं अबहिं ज्यों आये त्यों जात ॥

चौपाई ।

इमि सरोस सुनि कौशिकबानी । तजति न कंप अवनि अकुलानी ॥
भे भयभीत अमर नर जेते । होइ कहा यह भाषत ते ते ॥
तब बशिष्ट लखि कौशिकरूपे । समझावत भे दशरथ भूपै ॥
रघुकुल मैं लहि जनम सु ऐसौ । करु न प्रतिज्ञा भंग अनैसौ ॥
दैन कहिहि फिर देत न जो है । अजस अकृन कौ भाजन सो है ॥

संचित जु कछु प्रथम पुन्याई । सु सब झूठपन के सँग जाई ॥
तातें तुम अब रामहिँ भेजौ । कौशिकमुनि सँग अघ न अँगेजौ ॥
जानत कछु कै जानत नाहीं । राम धनुषविद्या के ताहीं ॥
सो सब मुनिप्रभावहिँ पैहैं । निहनि निशाचर जगजस लैहैं ॥
सुनहु सकलकौशिकपरभाऊ । धरमरूप मुनिमन बच काऊ ॥
विद्यावन्त परम तपसी हैं । भावीभूत विजानतही हैं ॥
अस्त्रशस्त्र विद्या सब जानैं । मनुज सुरासुर बल पहिचानैं ॥
करत राज जब है मुनिराई । लिय आयुध सब हरहिँरि आई ॥
पुनि कृसाश्व परजापतिही तैं । सुत अनेक उपजे प्रिय जी तैं ॥
तिन परजापति दच्छसुता तैं । बहु आयुध किय नाम जया तैं ॥
ते सब असुरविनासन काजैं । भे पचास आयुध छवि छाजैं ॥
बहुरि सुप्रभा नाम सुदूजी । दच्छप्रजापति कन्या कूजी ॥
भे पचास तिह तैं पुनि औरैं । संघारन आयुध इक ठौरैं ॥
तिन अस्त्रन कौ त्याग सँघारू । इक मुनि जानत सकल प्रकारू ॥
पुनि नवीन आयुध बहुकरता । हैं कौशिकमुनि ये अघहरता ॥
जु चहँहि तौ सब रच्छस मारैं । निजतपतेज चराचर जारैं ॥
ये इक तुव सुत कौ हितचाही । आये मांगन राम जु ताही ॥
इक इनके सुअनुग्रहही तैं । ह्वै हैं राम अजित सबही तैं ॥
तातैं तजि सब सोच उपेजौ । बेग बुलाइ सुरामहि भेजौ ॥

दोहा ।

या बिधि सुगुरु वशिष्ट के सुनि वच दशरथ बीर ।
मुनि सँग पुत्र सुभेजियै किय सम्मति धरि धीर ॥

इति श्री बालकांडे एकबिंशतिः सर्गः ॥ २१ ॥

छन्द ।

तब नृपति दशरथ सुगुरु सिष्ट वसिष्टबचन प्रमानि कैं ।
श्रीरामचन्द्रहिँ कौं बुलावत भे सुमंगल ठानि कैं ॥
त्योंहीं सुकौशिल्यहु गुरुह कहि स्वस्ति आसिष बहु दये ।
नृप सूंघि सुतसिर ह्वै प्रसन्न सुकौशिकहि सौंपत भये ॥

दोहा ।

गये जु विश्वामित्रढिग लखनसहित श्री राम ।
पवन चल्यो तबहीं सुखद सुचि सुगंध अभिराम ॥

चौपाई ।

सुर बजाइ बहु शङ्ख नगारे । बरसे सुमन नदन बनवारे ॥
पाइ दुहुन मुनि चलि भे आछैं । स-लखन राम भये तिन पाछैं ॥
धरहिँ धनुष सोहि इमि नामी । जनुअश्विनिसुतबिधिअनुगामी॥
यों छ कोस पुर तें चलि आये । सरजू दच्छिन पार सुहाये ॥
तहँ मुनि कौशिक बचन उचारे । सुनहु राम दशरत्थदुलारे ॥
करहु आचमन इतहिँ अभीतै । भूख प्यास को समय न बीतै ॥
प्रथम बला पुनि अति बल नामै । मंत्रसमूह लहहु अभिरामै ॥
इन मंत्रन के परम प्रभाऊ । होत न श्रम ज्वर चढ़त न काऊ॥
परि प्रमाद सोवत सपनेंहूं । रच्छस दुख दै सकत न कैंहूं ॥
बढ़त भाग उपजत चतुराई । ज्ञान होत बुधि निहचलताई॥
सूझत ज्वावहु उपरि सुज्वावै । भूखहु प्यास न कबहुं सतावै ॥
प्रगटत परमप्रभाव पड़ैई । जगत सुजस बल बिपुल बढ़ैई ॥
ये अब दुहु विद्या हहिँ ऐसी । बलहु सुअतिबल और न तैसी ॥

जु प्रजापति कृस अश्व बखानौ । तिनकि सुत रूपहि ये जानौ ॥
तातैं तुम विद्या ये दोऊ । लैन जोग जग और न कोऊ ॥
तुव मुखँ पाइ सुविद्या आछैं । बिबिध रूप पावैगी पाछैं ॥
रामचन्द्र यह मुनि मुनिबानीं । कीन्हि आचमन सुबिध प्रमानी ॥
ग्रहन करी ते विद्या दोऊ । लखि न पर्यो तिनसम पुनि कोऊ ॥
रामचन्द्र तहँ तबहिँ बिराजे । सरदभानु मानहु छबि छाजे ॥
पुनि गुरु की सेवा करि नीकैं । परनकुटी रचि तीर नदी कैं ॥

दोहा ।

सरजू दच्छिन पार तहँ आसन सुभग बिछाय ।
सुनत कथा मुनिमुखकथित किय निवास रघुराय ॥

इति श्री बालकांडे द्वाविंशतिः सर्गः ॥ २२ ॥

छन्द ।

तहँ परषि प्रात मुनीसआयस लै सु उठि रघुबर बली ।
करि सौच दतुअनि न्हाइ बिधिवत जपि सुगायत्री भली ॥
पुनि परसि विश्वामित्रपग करि प्रणति मुनि सँग छबिछये ।
चलि कछुक आगैं गंगसरजूसंगमहि देखत भये ॥

दोहा ।

जहँ बहु बरसन तैं सुतप तपत रिषिन के ग्राम ।
लखि तिनके तित आश्रमहि मुनि सों बोले राम ॥

चौपाई ।

या आश्रम कहिये किहि को है । बसत कौन इत सुछबि छयो है ॥

सुनि मुनि तबहिँ राम सों भाषे । इहाँ प्रथम शिव तप अभिलाषे॥
करि बिवाह लहि उमहि महेसू । आइ इतहिँ किय तपपरबेसू ॥
तबहिँ मदन धनु धरि तनु धारैं । कीन्ह शिवहि व्याकुल इक बारैं॥
तब ललाट दृग खोलि महेशू । भसम कीन्ह कामहिँ इहिँ देशू॥
मदनअंग भसमहि सों छायो । अंगदेश यह तिहिँ तें गायो ॥
इत शिवशिष्य मुनीसुर जेते । करतै रहत सुजप तप तेते ॥
यहहिँ एक निसि बास करीजे । भोर सरितसंगमहि तरीजे ॥
ता पीछें तहँ सबहिँ अन्हाये । कै जप तप तिहि आश्रम आये॥
तब सब तहँ के ऋषि हरषाने । कै पूजन कौशिक सनमाने ॥
ते पुनि राम लखन सों भेंटे । दै आसिष सुख सबनि समेटे ॥

दोहा ।

काम आश्रमहि के विषें मुनि कौशिक के संग ।
राम लखन एक निसि बसें करत कथापरसंग ॥

इति श्री बालकांडे त्रयोविंशतिः सर्गः ॥ २३ ॥

छन्द ।

तहँ होतहीं परभात कौशिक राम लछमन मुनि सबै ।
सुरसरित सरजूसरितसंगम तीर पर पहुंचे तबै ॥
ते मुनि मँगाय सुनाव बिश्वामित्र यों बोलत भये ।
अब करहु कछु न बिलम्ब उतरहु पार चढ़ि बोहित नये ॥

दोहा ।

राजकुमारनिजुत सुपथ सावधान बन माह ।
जाहु आपने आश्रमहिं क्षेम कुशल मुनि नाह ॥

चौपाई ।

यों सुनि कौशिकमुनिगनि बानी । भेंटि सबनि चढ़ि नाव सुआनी ॥
चलि भे नाव खिवाइ तहाँ तैं । भर्भर शबद सुनत चहुंघातैं ॥
सो सुनि रामशैबद मुनि पाहीं । भे बूझत जगजन के ताहीं ॥
कहहु शबद यह होत कहां तैं । सुनि मुनि भे बोलत वे बातैं ॥
किय बिरंचि कैलाशहि माहीं । मानसरोवर सुभग सदाहीं ॥
तहँ तें यह सरजू उमही है । आइ अवधपुर पास बही है ॥
तहँतैं चलि जु मिली गङ्गा सौं । भौ संगम उपजत रव तासौं ॥
अब इह सुभ संगम कै ताईं । करहु प्रनति करि जोरि यहांहीं ॥
या बिधि उतरि सुउत्तर पारै । जाइ लखत भे बिपन उजारै ॥
तब बूझत भे राम मुनीसै । यह निरजनबन कवन जु दीसै ॥
झुकत झार झिल्लिन झनकारे । सिंहबाघगन गरजत भारे ॥
करत कुलाहल सकल पखेरू । निपट भयङ्कर तरु चहुं फेरू ॥
यों सुनि रामबचन मुनि कह्यऊ । यह बन सुनहु जवन बिधि भयऊ ॥
है दुइ देश प्रथम इह ठामा । मलदा बहुरि करूषा नामा ॥
एक समै बृत्रासुर भार्यौ । लै निज बज्र सु इन्द्रहि मार्यौ ॥
हनत लगी द्विजहत्या ताही । भयहु मलिन सहिसकि न क्षुधाही ॥
ऋषि देवनि इमि इन्द्रनिहारी । मलिन क्षुधित अति दीनदुखारी ॥
तब मिलि सबनि कलसजलपूरे । लै अभिषेक कियौ चहि रूरे ॥
यों मल सकल जु क्षुधहु छुड़ाई । तबहिँ इन्द्र पुनि निजदुति पाई ॥
छुटत भयौ मल जित मघवाकौ । मलवा नाम विषय भौ ताकौ ॥
पुनि जित इन्द्र सु भूप तज्योई । बहहि करूषादेश भयोई ॥
दै पुनि बर दुहुँ देशनि ताईं । सब चीजन की कीं अधिकाई ॥

ता पीछूं सब देव सुरेसै । बहुत सराहत भे बल वेसै ॥
यों दुहुंदेश सुलहि अधिकाई । बसत भये इत बहु दिन तांई ॥
तबइकजुवतिजुजच्छिनिजागी । इक हजार गजवत बलपागी ॥
सुभई सुन्द असुर की जाया । नाम ताड़िका तनक न दाया ॥
ताकैं भे सुत है बलधामा । इक मारीच सुबाहु सुनामा ॥
तिन इन देशनि आनिउजाख्यौ । उदसि देश यह भौ बन भाख्यौ ॥
वहहि ताड़िका राम इहांतैं । है छह कोस बसत अब यातैं ॥
तितकौं निजभुजबलहिँ चलीजै । मारि ताड़िकहि जगजस लीजै ॥
मम आयसु इह बन की पीड़ा । दूरि करहु करि निजभुजक्रीड़ा ॥

दोहा ।

तौन ताड़िका के डरन या बन बिच रघुराइ ।
कोऊ आइ सकै न नर दीन्ही कथा सुनाइ ॥

इति श्री बालकांडे चतुर्विंशतिः सर्गः ॥ २४ ॥

छन्द ।

यों सुनि सुकौशिक के बचन रघुवंशमनि बूझत भये ।
कै जच्छ जन जग जनमही तैं होत सब निरबल छये ॥
क्यौं इक सहस हाथीन को बल ताडिका जच्छिनि लह्यो ।
ये मुनि सुबच श्रीराम के मुनि पुनि प्रत्युत्तर यों कह्यो ॥

दोहा ।

एक समै इक जच्छ भौ जाकौ नाम सुकेतु ।
करत भयो सो विपुल तप पुत्र होन के हेतु ॥

चौपाई ।

तब प्रसन्न ह्वै विधि यह कीन्हौं । कन्यारतन महाबल दीन्हौं ॥
इक हजार गजवत बल छाई । नाम ताड़िका जच्छिनि थाई ॥
पुत्र दियो नहिँ ताहि बिधाता । भौ सुकेत कन्या कौ चाता ॥
तबहिँ जु जम्भासुर कौ जायौ । सुन्द नाम जो असुर गनायौ ॥
दीन्ही व्याहि तिहहि बडबाला । तातैं भौ मारीच बिसाला ॥
कछु दिन गमत अगस्तिहुं आपे । माख्यौ सुन्द असुर दै शांपे ॥
तब सपुत्र जच्छिनि उठि धाई । खावै सुमुनि अगस्तिहिँ आई ॥
तब अगस्तिमुनि दीन्ह सरापू । राच्छस होहु दुहूं निजमापू ॥
जच्छिनि तें रच्छिनि सुभई यौं । ससुत ताड़िका सुबलमयी यौं ॥
ता दिन तें गो पशु नर जोऊ । यासौं बचत न बन बिच कोऊ ॥
तातैं अब हित बिप्र गऊ के । हनहु याहि सर बाँधि अचूके ॥
तियहत्यहु कौ तजि सन्देहू । मम बच काज करौ अब येहू ॥
छचिन कौ निज धरम यही है । चारि बरन परिपालनहो है ॥
करहि जु अतिअधरम तिहिमारैं । पुन्य पाप तहँ कछु न बिचारैं ॥
एक समै जु बिरोचनकन्या । प्रबल मन्थरा नाम अधन्या ॥
लागी भखन प्रजन के ताईं । निरषि इन्द्र तब हनियत ताईं ॥
भृगुऋषिपत्नि पतिब्रत छाई । ताहि न इन्द्र रजाइस भाई ॥
करनि चह्यौ जग इन्द्र बिहीनौ । तब ताकौ बध हरिही कीनौ ॥
परसुराम पुनि निज महतारी । पाय सुपितु आयस हनि डारी ॥
तातैं होइ जु पापिनि नारी । ताहि हनत नहिँ दोष बिचारी ॥

दोहा ।

यातें मेरे बचन तैं हनहु ताड़िकै आप ।
राम सु यामैं पुन्य बहु तुमहिं न परिहै पाप ॥

इति श्री बालकांडे पञ्चविंशतिः सर्गः ॥ २५ ॥

छन्द ।

यों राम सुनि मुनि के बचन बोलत भये कर जोरि कैं ।
पितु हमहिँ पठयो आप सँग यों कहि सुभाँति करोरि कैं ॥
जो देहिँ बिश्वामित्र मुनि आयसु सु तुम कीजौ भलैं ।
यातैं सु बाननि ताड़िका पापिनि हनहुंगो यहि थलैं ॥

दोहा ।

या कहि राम चढ़ाइ धनु कीन्हि पनच टंकोर ।
सुनहु शब्द सो ताड़िका उठि धाई तिहिं ओर ॥

चौपाई ।

ताहि निरखि रघुनाथ अडोले । बिहँसि बचन लछमन सों बोले॥
लखहु ताडिकहिँ लछमन भाई । भुजनि भयङ्कर भेष भुराई ॥
पीसत दन्त सु खीसन काढ़ै । बेहद वार मनहु जम डाढ़ै ॥
अस को नर जो याहि निहारै । तजहि न प्रान बिनाहो मारै ॥
यह आवति दुहु भुजनि पसारै । मायाबिनि बद बदन बगारै ॥
गरजति तदपि न प्रान हरूँगो । काटि नाक श्रुत दूरि करूँगो ॥
होत न मारन जोग जु नारी । है यह बड़ पापिनि भुज भारी ॥
ये बच सुनि रामहिँ पर धाई । प्रबल ताड़का निकटहिँ आई ॥

तब मुनि निज हुंकार सुनाई । सो सुनि कछुक टरी छलकाई ॥
तब मुनि कह्यहु राम के ताईं । कुशल रहहु जय लहहु सदाहीं॥
तबहिँ ताड़िका धूर उड़ाई । किय कछु मोहित दोऊ भाई ॥
ता पीछें पुनि रचि कछु माया । बरसी बहु पषाननि काया ॥
तब पषानबरषा रघुराई । निज बाननि करि दूरि दबाई ॥
पुनि सुभ शायक बाहि सु डारे। ताके काटि दु भुज महि डारे॥
ता पीछें लछमन सर बाहे । काटी नाक श्रवन दुहु दाहे ॥
यों जब अंग भंग करि डारी । तबहिँ लजाइ भजी तजि रारी॥
ह्वै अन्तरहित पुनि बरसाये । बहुत पषान न जात गनाये ॥
तब भाषे मुनि सुन रघुराई । वहहि सुमाया यह रचि ल्याई॥
ह्वै अन्तरहित सिलनि चलावै । अब यह जीवति जान न पावै ॥
याबिधि यह ऋषिमषनिबिनासै। गो बिप्रनि पुनि करति सुग्रासै॥
पापिनि परम ताड़िका ऐसी । मायाविनि अति अदय अनैसी॥
नारी मानि करहु मति दाया । ठानहिँगी न सिलहि बहु माया॥
साँझ भई यह सो लखि लीजे । निपट निशा अब होन न दीजे॥
ये सुनि मुनिबच राजदुलारे । बाहे राम सुबान अपारे ॥
तिन बानन घेरी वह बामा । टूटी राम उपरि इमि भामा ॥
मानहु प्रलय मु बिज्जुलि आई। सो इक सर हनि मारि गिराई॥
या बिधि जबहिँ ताड़िका मारी। सुखित भये सुर सकल निहारी॥
साधु साधु जयजय कहि बानी । आइ सुरन महिमा सु बखानी ॥
ह्वै प्रसन्न तब इन्द्र तहाँई । बोले मुनि कौशिक के ताँई ॥
ए मुनि हम लखि रामलराई । भे प्रसन्न सुख उर न समाई ॥
तातैं राम उपरि करि नेहू । अब कृसाश्व सुत अस्त्रनि देहू ॥

हैं ये इक उन अस्त्रनि जोगू । इन तैं सुख लहिहैं सुरलोगू ॥
या कहि सुरन समेत सुरेसू । जात भये सुरलोक सुबेसू ॥
ह्वै प्रसन्न तब मुनि यह भाषे । सूंघि रामसिर हित अभिलाषे ॥
साँझ भई अब कहुं न चलीजे । आज इतहिँ इक रजनि बसीजे ॥
होत भोर मम आश्रमही कों । चलवी आपु सुखद सबही कों ॥
ये सुनि मुनिबच राजदुलारे । बसत भये तितहीं बन भारे ॥
तब वह बन सोभित भौ ऐसैं । सहित सुरेस नदनबन जैसैं ॥

दोहा ।

दशरथ राजकुमार यौं प्रथम ताड़िके मारि ।
लेइ सुयश गुरु कौ तहहिं सोये निसहि निहारि ॥

इति श्री बालकांडे षष्टविंशतिः सर्गः ॥ २६ ॥

छन्द ।

तहँ होत प्रात प्रसन्न उठि मुनि राम सों ये बच कहे ।
हे राजपुत्र निहारि तुव बल हम सुहृदि आनँद लहे ॥
हौं देत यातैं लेहु तुम उपदेश अस्त्रन कौ अबै ।
पैहैं पराभव आप सों सुर असुर किन्नर नर सबै ॥

दोहा ।

तबहिं राम शुचि ह्वै तितहिं लिय सुअस्त्र उपदेश ।
पढ़त भये सो शस्त्र सब भे हाजिर धरि बेश ॥

रोला छन्द ।

दण्डचक्र हरिचक्र धर्मचक्रहु जो गायौ ।
कालचक्र अतिचक्र इन्द्रचक्रहु कवि छायौ ॥

वज्रास्त्रहु शिवशूल ब्रह्मसिर अस्त्र बखानी ।
एषीकास्त्र बिसाल बिमल ब्रह्मास्त्रहु जानी ॥
सिषिर मोदकी नाम गदा ये आईं दोऊ ।
धर्म बरुन कृतपास कालपासहु ते सोऊ ॥
बारुनास्तर द्वै असनि एक सूखी इक आली ।
द्वै शक्ती तरवारि एक उत्तम जनु काली ॥
पासुपतास्त्र प्रसन्न अस्त्र नारायण नामा ।
बायवियास्त्र बिशाल अस्त्र अग्नेय सुधामा ॥
बारुनास्त्र क्रौंचास्त्र हयग्रीवास्त्र सुहाये ।
कङ्कालहु कापाल मुसल ये दोऊ आये ॥
वर विद्याधर अस्त्र नाम नन्दन जो ऐसो ।
मोहन स्वापन समन सौम्यकर्षन पुनि तैसो ॥
सोषन सन्तापन तहँहि सुबिलापन येहू ।
मादक त्यों नव नाम अस्त्र गन्धर्बन केहू ॥
ता सम सम्बर्त्तास्त्र बहुर मौसल सौमनहू ।
सत्यास्त्रहु मायास्त्र त्वाष्ट्र अस्त्रहि पुनि गनहू ॥
सोमास्त्रहु सौरास्त्र सु निजनिज रूपनि धारैं ।
रामहिं सौं करि जोरि सबै बोले इक बारैं ॥
अस्त्र शस्त्र हम सकल कामरूपी अब आये ।
अज्ञाकारी अमल आपके दास सुहाये ॥
कीजैं जो कछु हुकुम करहिं हम अबहीं सोऊ ।
तुम स्वामी सरबज्ञ हमारे धारक होऊ ॥
रामचन्द्र तहँ सबनि परसि निज कर सौं नीकैं ।
पुनि बोले तुम रहहु सदा भीतर मम ही कैं ॥

दोहा ।

यौं कहि अस्त्रनि सों तबै करि कौशिकहिं प्रनाम ।
चलत भये मग लखन जुत समुनि तहां तैं राम ॥

इति श्री बालकांडे सप्तविंशतिः सर्गः ॥ २७ ॥

छन्द ।

इहि रीति सौं मग चलत मुनि सों राम पुनि बोले तबै ।
इक आप के दीन्हे समन्त्र सुशस्त्र हम पाये सबै ॥
भौ अभय दानव देवतन तैं तदपि अब कछु कहत हौं ।
ये अस्त्र बाहे पर बहुर संहार जान्यौ चहत हौं ॥

दोहा ।

बोले विश्वामित्र तब रामचन्द्र सों येहु ।
शस्त्र सु उपसंहार के सब समंत्र अब लेहु ॥

रोला छन्द ।

सत्यवान प्रतिहार रभस पुनि धृष्ट सुनाभै ।
सत्यकीर्त्ति सतबक्र बिमुख सन्मुख दृढ़ राभे ॥
लक्ष अलक्ष दसाक्ष रुचिर दस सीरष जानो ।
महानाभि नैरास्य सतोदर मोह पिछानौ ॥
धरमनाभ सुभनाभ सकुन जौं गम्बर देखौ ।
जोतिष पिथ्रस निद्र दैत्य मन्थन रति लेखौ ॥
सरपनाथ सौ मनसकामरूपी पन्थानौ ।
सारचि माली वृत्तिनाम पुनि अतिमालीनौ ॥

जोतिष मकर बिधूत आवरन जम्भक नामा ।
कामरूप धनु धान्य बिमल यह सो छबिधामा ॥
दुन्दुभि नाभहु बरुन मन्त्र इनके सिष दीसौं ।
उपसंहारक अस्त्र कहे ये पैतालीसौं ॥
ये कृसाश्व पर जे सपुत्र रूपै सब जानौ ।
तुम इनको स्वीकार करहु मम वचन प्रमानौ ॥
राम तबहिँ लै मन्त्र बहुरि मुख ह्वै जु उचारे ।
दिव्यरूप धरि अस्त्र सकल आये अति भारे ॥
एकैं अगिन समान इकैं धूमहि से छाये ।
एकैं भानु समान इकैं ससि से मनभाये ॥
ह्वै सनमुख कर जोरि अरज सब अस्त्रनि ठानी ।
अज्ञाकारी करहिँ काज जो कहहु सुबानी ॥
सुनि बोले श्रीराम हमारे मनमैं रहहू ।
जब हम चाहैं तबहिँ प्रगट ममकारज करहू ॥
जहँ तुम्हरो मन होहि तहाँहीं कौ तुम जाऊ ।
या बिधि आयस पाय राम कौं ते इक हाऊ ॥
चलत भये सब अस्त्र प्रनति करिकरि पुनि रामै ।
ज्यौं आये त्यौं तबहिँ जात भे निज निज धामै ॥

छन्द हरिगीतिका ।

या बिधि सुअस्त्रनि दै बिदा चलि भे सुमग तहँ तैं सबै ।
त्यौं बन सझाड़ सुपार ह्वै शुभ देश देखत भे तबै ॥
तहँ राम पुनि मुनिनाथ सौं इक गिरि निरखि बोलत भये ।
इहि गिरि समीप बिलोकितु बहु ब्रच्छ अतिहीं छबि छये ॥

जहँ करत मृगलीला सुखग कूंजै अनेक प्रकार के ।
यह आसरम है कौन से तपसीन की तुम सार के ॥
पुनि हैं कहां अति दुष्ट दोऊ वे निशाचर नीचहू ।
जे करत हैं बहु बिघन बहु बिधि आप के मष बीचहू ॥

दोहा ।

या विधि बूझत भे मुनिहिं दशरथराजकुमार ।
रामचन्द्र रघुबंशमणि त्रिभुवन के शृंगार ॥

इति श्री बालकांडे अष्टाबिंशतिः सर्गः ॥ २८ ॥

छन्द ।

यों राम के सुनि बचन बिश्वामित्र पुनि बोले तबै ।
यह प्रथमहीं भगवान बामन कौ सुआश्रम है सबै ॥
इत सैकरन जुग लौं तपस्या बिष्णु निज डीलन करी ।
तपसिद्धि जहि तिहुलोकनाथ सुपीर देवन की हरी ॥

दोहा ।

सोभित इह आसरम को सिद्धाश्रम यह नाम ।
या विधि सुनि मुनि के बचन पुनि बूझत भे राम ॥

चौपाई ।

कौन हेत भे बामन स्वामी । यों सुनि पुनि बोले मुनिनामी ॥
एक समै सुबिरोचनही कौ । सुभ सुत बलिनामा अतिनीकौ ॥
जीत सकल सुर बलि असुरेसू । छीन लीन्ह सुरलोक सुबेसू ॥
ह्वै बलि चक्रपती बलधामा । करन लग्यौ मष अतिअभिरामा ॥
तब इह आश्रम सब सुर आये । बोलत भे हरि सौं दुखछाये ॥

करत यज्ञ बल असुर बली है । भीख देत मुखकथित भली है ॥
मखपूरन वह होन न दीजै । यह कारज हमरो प्रभु कीजै ॥
ह्वै बामन रचि कीनहु माया । छलहु बली बलिकों धरिकाया॥
करि स्वीकार विष्णु सुख लह्यऊ। कश्यपमुनि सुतहित तप ठयऊ ॥
दिव्य हजार बरस तप कीन्हों । अदितिसहितमुनि परत न चीन्हों
प्रगटे विष्णु तहीं छबि छाये । तिनहिँ निरखि कश्यप गुन गाये॥
ह्वै प्रसन्न भगवान सुभाषे । बर मांगहु मुनि उर अभिलाषे ॥
जाच्यौ तब कश्यप बर येही । अदितिउदर लै जनम सनेही ॥
ह्वै सुरपति के छोटे भाई । सब देवन कौ करहु सहाई ॥
यह आश्रम सिद्धाश्रम नामा । जगत बिदित होवै अभिरामा ॥
अदितिउदर तैं तब तिहिँ बारै । लै प्रभु बामन तन अवतारै ॥
भे आवत बलि के मख माहीं । तीन पैग महि मांगि तहांहीं ॥
तीनपगनि भरि त्रिभुवन लीन्हौ। बलिहि बाँधि इन्द्रहि नृप कीन्हौ॥
हौंहूं सुतप तपत इहिँ ठाँईं । बिघन निशाचर करत यहाँईं ॥
तातें तुम अब तिनकों मारौ । प्रथम सुआश्रम माझ पधारौ ॥
यों मुनि राजकुमारन लीन्हें । किय प्रबेश आश्रम चित चीन्हें ॥
निरखि कौशिकहि आवत ऐसें। नखत पुनरबसु बिच ससि जैसें॥
सुखित भये मुनि आश्रमबासी। किय आदर उठि प्रनति प्रकासी॥
पहुंच आश्रमहिँ राम तहाँई । बोलत भे कौशिक मुनि ताईं ॥
आजुहि मख आरंभ करीजे । सिद्धाश्रम बिच ऋतुफल लीजे ॥
बिश्वामित्र हरषि ता पाछैं । मख आरंभ करत भे आछैं ॥
राम लखन तहँ दोऊ भाई । करि निवास इक राति बिताई॥

दोहा ।

होत प्रात उठि यम नियम करि संध्या असनान ।
किय प्रनाम जगमित्र कौं आगमनिगमनिधान ॥

इति श्री बालकांडे एकोनविंशतिः सर्गः ॥ २९ ॥

छन्द ।

तहँ राजसुत मुनि सों तबहिं बूझत भये जु सितावहीं ।
कै कौन से समयैं बतावहु वे निशाचर आवहीं ॥
सुनि राजपुत्रन के बचन सुनि और मुनि बोले तबै ।
तुम आजु तें छह दिवस लौं अब करहु मखरक्षन सबै ॥

दोहा ।

विश्वामित्र पवित्र मुनि मुदित मौनव्रत धारि ।
बैठे यज्ञविधान हित रच्छक तुमहिं निहारि ॥

चौपाई ।

राजसुतन तब निद्रा त्यागी । धनुष बान कर धरि बड़भागी ॥
या बिधि दिन पंचक सुबितायौ । मख निरखत छठयों दिन आयो ॥
तबहिं लखन सौं श्रीरघुराई । बोले रहहु सचेतन भाई ॥
तहँ ऋत्विजनि अगिन पजारी । सुभ सोभित वेदीन मझारी ॥
ऋषिन यथाबिधि मन्त्र पढ़ेई । भे आवत नभ निशिचर तेई ॥
गरजत घनसम रचत सुमाया । बरसत रुधिर धरैं अति काया ॥
तब रघुपति लखि बेदिन माहीं । बूदैं रुधिरन की तिहि ठाहीं ॥
भे बोलत लखु लछमन भाई । खलन रुधिरबरषा बरसाई ॥

मिलि मारीच सुबाहु जु दोऊ । लरिहैं बहुत उपद्रव सोऊ ॥
यातैं मानवअस्त्र चलाऊँ । धुननि पवन त्यौं इनहिँ उड़ाऊँ॥
या कहि मानवअस्त्र चलायौ । मायावी मारीच उड़ायौ ॥
सो मारीच निपट थरथरउ । तहँ तैं सौ जोजन पर परउ ॥
सीत भीत अति होइ अचेतू । पर्यौ सिन्धु बिच कलुषनिकेतू ॥
तबहिँ राम लछमन सों कह्यउ । परि सुदूरि खल जीवत रह्यउ ॥
अब सुबाहु राच्छसहि हनौं हौं । या कहि अगिनअस्त्र करि सौंहौं॥
सो सुबाहु पर तबहिँ चलायौ । निहनि तिइहि महिमांहँगिरायौ
बाकी और निशाचर जेते । तवन अस्त्र सों मारे तेते ॥
कछुक मरे कछु उड़ि उड़ि भागे । निरखि मुनीश सबै सुखपागे ॥
करत भये सब परमप्रशंसा । जय जय राम जगत अवतंसा ॥
जय राघव जय दशरथप्यारे । जय कौशिल्यातनयदुलारे ॥
ता पीछैं कौशिकमुनिराई । यज्ञ समापत कीन्हि तहाँई ॥
तब मुनि रघुनन्दन सों बोले । ह्वै प्रसन्न लहि हरख अडोले ॥
तुम ममबचन समुझि श्रुति कैसे । मारे महत निशाचर तैसे ॥
निरभय सुभ सिद्धाश्रम कीन्हौ । सकल मुनिनकौं अतिसुखदीन्हौ

दोहा ।

यौं प्रसंसि मुनि राम कौं करत भये संध्याहि ।
राम लखनहूं जपत भे निज गायत्री ताहि ॥

इति श्री बालकांडे त्रिंशतिः सर्गः ॥ ३० ॥

छन्द ।

तहँ राजपुत्र बिताइ निशि वह होत प्रातहिँ छबि छये ।
उठि न्हाइ सन्ध्या करि प्रनति करि सुगुरु सों बोलत भये ॥

हम दास हुकुमी आप के जो कहहु सो करिहैं अबै ।
यों सुनि बिनति रघुबीर की तब और मुनि भाषे सबै ॥

दोहा ।

मंजुल मैथिलदेश में भूपति जनक विदेह ।
यज्ञ करत सो देखिबे चलिये सहित सनेह ॥

चौपाई ।

तहँ अद्भुत इक धनुष धर्यौ है । सुभसोभित अति ओज भर्यौ है॥
बहु धनु सुरनसमाजि दियौ हो । देवरात राजहिँ सु लियौ हो ॥
सो वह धनुष न चढ़त चढ़ाये । निशिचर असुर सबनिहूं आये ॥
किन्नर नर की कौन चलावै । जो वह धनुष उठाइ चढ़ावै ॥
वहहि धनुष अब जनकबिदेही । करि पूजन थाप्यौ मख तेही ॥
पुहुपं धूप दीपन सों दीप्यौ । चन्दन अगर अतर बहु लीप्यौ ॥
यों सुनि सकलमुनिनकी बानी । बिश्वामित्र मुनीश्वर ज्ञानी ॥
लै सँग राम लखन दुहुं भाई । मुनिनसहित चलि भे मुनिराई॥
सिद्धाश्रहिँ प्रनति करि भाखि । तुम्हरे थल हम मषफल चाखि ॥
अब गंगाहि उतरि उहि पारैं । जैहैं उत्तर के सुकिनारैं ॥
यों कहि मुनि ह्वै उत्तर सौंहैं । चलत भये मग सबनि सँगौंहैं ॥
तहँ सैकरनि सकट लै आये । अगिनहवन सामग्रिन छाये ॥
सकल ऋषीश्वर या बिधि चाले । साथ लगे खग मृग परिपाले ॥
लखिखगमृग मुनि तबहिँ पठाये । निज आसरमहिँ कौं छबिछाये॥
या बिधि चलत पहर त्रय माहीं । भे पहुँचत नद सोन जहाहीं ॥
तहँहि न्हाइ करि सन्ध्या आछें । लखि रबि अस्त बहुरि ता पाछें॥
करत भये तब मुनिगन जेते । अगिनहोम बिधिवत सम तेते ॥

दोहा ।

बैठि सु गुरु सनमुख तहँहिं बूझत भे रघुराइ ।
सोभित बन निसु कौन कौ कौन देश यह आइ ॥

इति श्री बालकांडे एकत्रिंशतिः सर्गः ॥ ३१ ॥

छन्द ।

यों सुनि सुमुनि भे कहत राघव सुनहु इक पूरब समै ।
कुशनाभ राजा भे मही पर ब्रह्मपुत्र महातमै ॥
तिनके बिदरभाधिपसुता तैं चारि पुत्र तबै भये ।
कुशनाभ आसूरतरजा बसु त्यौं कुसाम्ब सुनाम ये ॥

दोहा ।

तब बोले कुश सुतन सौं छत्रिन कौ निज धर्म ।
प्रजापालना रूप है सो तुम करहु सुकर्म ॥

छन्द ।

तब भे बसावत चारि पुत्र नृप चारिहू करि आतुरी ।
राजा सु कौसम्बहि रची निजनाम कौशम्बीपुरी ।
कुशनाभ राजा किय नगर सुभ इक महोदर नाम कौ ॥
पुर कियहु धरमारण्य आमूरतरजा बिस राम कौ ॥

चौपाई ।

बसुनामा राजहु छबि छाई । नगरी बसुमति नाम बसाई ॥
या बिधि चहुँन चहूपुर कीन्हौ । ते इह देशहि अति छबि दीन्हौ ॥
इतहिँ सु नद यह सोन सुहायौ । प्रगटि पाँच गिरि बिच सौं आयौ

कुशसुत चारि प्रथम जे गाये । तिन बिच इक कुशनाभ गनाये॥
तिन कुशनाभ सुअवसर पाई । नाम घृताचि जु अति छबिछाई॥
तातें प्रगट भईं सत कन्या । सुन्दररूपवती तन धन्या ॥
ते लहि जोबन एक समैहीं । जात भईं सुबगीचनमैंहीं ॥
तहँहि जाइ तिन गीत सुगाये । बीना ताल मृदङ्ग बजाये ॥
नचत भईं सुबिभूषन साजैं । तहँहि बिलोकि पवन तिन काजैं॥
बोलत भौ तुम सकल कुमारी । होहु बधू सुख हेत हमारी ॥
मोहि सुपति तुम जो करिलैहौ। मनुजभाव अबहीं तजि दैहौ ॥
लघु आयुष नर देह तहाँहीं । अतिचञ्चल जोबन की छाहीं ॥
तातें लेहु अचल तरुनाई । होहु अमर छबि छाइ सुहाई ॥
ते सब वायुबचन सुनि ऐसे । बोलीं बचन उचित तहँ तैसे ॥
रे मारुत जग अन्तरचारी । तूं यह अनुचित बात उचारी ॥
भौ तपतेजरहित तैं वायू । तातैं करत सुनास उपायू ॥
हम कुशनाभ नृपति की जाईं । तजहिँ न कुलमग सुधरम छाईं॥
बिनहिँ पिता के आयस ऐसे । कुल तजि करहिँ स्वयम्बर कैसे ॥
कन्यन को प्रभु एक पिता है । जाहि चहहि दै डारहिँ ताहै ॥
हमहिँव्याहि पितुजिहिकोंदैहैं। स्वामी वह हमसबको ह्वैहै ॥
हमरे पितु कुशनाभ नरेशू । हैं समरथ अति मनहु महेशू ॥
तोहि सुदिगपति की पदवी तें। चहहिँ तु दूर करिहिँ छिन बीतें॥
याबिधि सुनि कन्यनकी बानी। पवन तबहिँ रिस निज उर आनी॥
पैठि सबनि के तनुन मझारी। अति कुरूप कुबिजा करि डारी ॥
तब कन्या रोवत गृह आईं । तिनहिँ निरखि नृप सोचि तहाँईं॥

दोहा ।

भे बूझत कन्यानि सौं तुमहिं कुबज किहिं.कीन ।
पुनि कुरूप कैसे भई मुख मलीन तन दीन ॥

इति श्री बालकांडे द्वात्रिंशतिः सर्गः ॥ ३२ ॥

छन्द ।

या बिधि पिता के सुनि बचन सत कन्यका बोलीं तबै ।
निज तन हकीकत वायुकृत जा बिधि भई सुकही सबै॥
सो सुनि नृपति कुशनाभ निज कन्यनि सराह्यौ तिहि थलैं ।
तुम राखि निजकुल धरम धीरज करि क्षमा आई भलैं ॥

दोहा ।

नारिन कौं का नरन कौं ये आभरन अदोष ।
संरच्छन निज धरम कौं क्षमा सील संतोष ॥

चौपाई ।

धरम रच्छि आई तुम यातैं । पैहौ सिधि सत्वर सब तातैं ॥
नृपति सुकन्यनि सौं कहि ऐसैं । मन्त्रिन सौं बोल्यौ पुनि तैसैं ॥
हम कन्यन कौ व्याह बिचारौ । इनहि जोग बर तुमहु सिहारौ॥
तब मन्त्रिन मसलत ठहराई । कुशनाभहि तजबीज सुनाई ॥
एक मुनीश्वर चूली नामा । करत हतौ तप अति अभिरामा॥
तहँ उर मिल गन्धरवसुताही । सुभग सोमदा नाम जु ताही ॥
सो गन्धरबिनि मुनि की सेवा । करत रही निसिदिन तजिदेवा॥
सेवन करत कछू दिन बीतैं । ह्वै प्रसन्न बोले मुनि ही तैं ॥

माग़ु माग़ु बरदान जु चाहै । तब गन्धरबिन बोली याहै ॥
धरमवन्त सुत होंहि हमारैं । हौं अबिबाहित सरन तिहारैं ॥
या बिधि सुनि मुनि चूली दीन्हौ। ब्रह्म तपोबल सौं जो कीन्हौं ।
नाम सपुत्र पबित्र सुधर्मा । ब्रह्मदत्त नामा सुभकर्मा ॥
भयहु सुनृप धरमज्ञ महांहीं । बसत कंपिला नगरी माहीं ॥
ताहै व्याहि सुकन्या दीजे । यह तजबीज रुचहि तौ कीजे ॥
तब कुशनाभ सुबेगि बुलायौ । ब्रह्मदत्त नामा जो गायौ ॥
दीन्हीं ताहि बिबाहि कुमारी । एक एक बिधिवत तिहिँ बारी ॥
वहबर जिहिजिहिकौ करपरसै। सो सो परम सुभग तन दरसै ॥
यौं तजि कुबज कुरूप तहांई । होत भई सोऊ छबि छांई ॥
ब्रह्मदत्त परभाउ सु ऐसौ । लखि कुशनाभ सुखी भौ तैसौ ॥
ह्वै प्रसन्न दाइज बहु देकैं । आदर भाउ सुबहु बिधि कैकैं ॥
कँन्यन सहित सुदेश पठाये । ब्रह्मदत्त कंपिलपुर आये ॥

दोहा ।

तहँ गंधरवी सोमदा लखि सुत सुत बनितानि ।
भई प्रसंसत हरष सौं कुशनाभहि निजवानि ॥

इति श्री बालकांडे त्रयस्त्रिंशतिः सर्गः ॥ ३३ ॥

छन्द ।

या बिधि नृपति कुशनाभ सत कन्या दई सुविवाहि कैं ।
तहँ तबहिँ सुत कामेष्टि यज्ञ कियौ सुपुत्रहि चाहि कैं ॥
तब तासु पितु कुश ब्रह्मपुत्र सुआइ भाषत भे यहै ।
इक गाधि नाम सुपुत्र तेरैं होहिगौ जो चित चहै ॥

दोहा ।

ता गाधहि तैं जगत मैं ह्वैहै सुजस अपार. ।
या कहि कुश विधि लोक कौं जात भये तिहि वार ॥

चौपाई ।

तब कुशनाभतनय छविधामा । भे अगाधिमति गाधि सुनामा ॥
सुनहु राम ते गाधि हमारे । जनक परमपावन उजियारे ॥
हौं कुशबंश जनम जो पायौ । तातैं कौशिक नाम कहायौ ॥
सत्यवती इक मम भगिनी ही । सो रिचीक ऋषि कौं परनी ही ॥
सो पति संग गई सुरलोकै । पुनि जगपावन हित तजि ओकै ॥
होइ सुकौशिक सरित सुहाई । प्रगट हिमाचल ते छिति आई ॥
ताके तीर बहिन के नातैं । हिमगिरिनिकट कियौ तप तातैं ॥
पुनि तपसिद्धिअरथ हौं आयौ । सुभ सिद्धाश्रम कौं मख छायौ ॥
सो मख पाइ सहाइ तिहारो । भौ पूरन पायौ फल भारो ॥
या विधि देशकथा सुबखानी । निज उतपत्ति कही जगजानी ॥
अब ये कहत कथा रघुराई । बीती अधिक राति सुहाई ॥
अबहिँ आप सुख सोवन कीजे । सोये सब खग मृग लखि लीजे ॥
तरु निहचल तम चहुंदिशि छायौ । तारन नभ परगास सु पायौ ॥
ऊग्यौ चहत सु ससि नभ माहीं । या कहि मुनि भे सुचुप तहांहीं ॥

दोहा ।

राम सहित मुनिगन सबै कौशिक मुनिहिं सराहि ।
सोवत भे तट सोन के सुविसराम चित चाहि ॥

इति श्री बालकांडे चतुस्त्रिंशः सर्गः ॥ ३४ ॥

छन्द ।

तहँ होतहीं परभात उठि सब न्हाइ सन्ध्या करि चले ।
मग चलत बर रघुबीर बिश्वामित्र सों बोले भले ।
उतरहिँ जु कैसें सोन नद सुनि मुनि कह्यौ इह राह सों ।
जिहि मग सबै उतरत ऋषी तिहि मगहि उतरहु थाह सों ॥

दोहा ।

यों तरि नद मग चाल तें भे दुपहर रवि सीस ।
पहुँचे गंगातट तबै बोले सकल मुनीस ॥

चौपाई ।

आज करहु सब कृत्य यहांहीं । या कहि न्हाइ सरित जलमांहीं ॥
तरपन अगिनहवन करि नीके । बैठे सब तट गङ्गाजी के ॥
बोले राम सुगुरु सों ऐसें । गङ्ग भई जगपावन कैसें ॥
कहन लगे मुनि तबहिँ कथा या । नाम हिमाचल परवतराया ॥
ताकें मैना नाम जु रानी । सो सुमेरकन्या जगजानी ॥
तिहिँ मैना द्वै कन्या जाईं । गङ्ग उमा नामनि छबि छाईं ॥
तब सब सुरन हिमांचल पाहीं । माग्यौ यह बरदान तहांहीं ॥
त्रिभुवनपावनहित यह गङ्गा । बहहि नदी ह्वै तरल तरङ्गा ॥
तब हिमगिरि गङ्गा के ताईं । सरितरूप किय तुरत तहांईं ॥
गौरि जु गिरि की छोटी कन्या । करत भई तप उग्र सुधन्या ॥
तब वह ब्याहि हिमाचल दीन्हीं । पारवती शिव कौं शिव लीन्हीं ॥
जेठी गंग उमा लघु सोऊ । त्रिभुवन विदित भईं ते दोऊ ॥

दोहा ।

गंगा प्रथम अकास में जात भई सु अनूप ।
ता पीछूं सुरलोक में प्रगटी ह्वै जलरूप ॥

इति श्री बालकांडे पंचविंशतिः सर्गः ॥ २५ ॥

छन्द ।

ऐसो कथा सुनि राम पुनि मुनिराय सौं बोले तबै ।
हे गुरु सुगंगा के चरित बिस्तार करि कहिये सबै ॥
किहिँ बिधि त्रिपथगामिनि त्रिजगपावनि प्रसिद्ध भई भलैं ।
सुनि तबहिँ कौशिक आदि तें भे कहत सुकथा तिहि थलैं ॥

दोहा ।

पूरब काल बिषै गिरिस करि गिरजा सौं ब्याह ।
सुरति रीति ठानत भये सुभ संतति की चाह ॥

चौपाई ।

निशि दिन रति करतैं निरभीते । देवन के सत संबत बीते ॥
तब सब देव निरख रति तैसी । सभय बिचार करत भे ऐसी ॥
जु कहुं उमा कें गरभ रहैगो । ताके तेजहिँ कौन सहैगो ॥
तातैं कछुक बिघन अब कीजे । यह कारज कौं होन न दीजे ॥
या कहि सब मिलि गे शिवपाहीं । करि प्रनति बोले तिहिँठांहीं ॥
हे शिव तिहुँलोकन के स्वामी । सुरपालक ब्रषपति के गामी ॥
अब तुम करि देवन पर दाया । तजहु सुरति अतिघोरमहाया ॥
आपन तेज सु आपुहि मांहीं । धारन करहु जगतहित ह्वांहीं ॥

तब शिव स्वीकृत करि सुरबानी । देवन सों यह बात बखानी ॥
चल्यहु जु बीरज तजि निज थानै । धारिसकहि तिहिकौं को आनै
धरिहै धरनि सुरन यह भाष्यौ । शिव तब वह बीरज महि नाष्यो
ताकि तेज नदी बन जेते । शैल समुद पूरित भे तेते ॥
देवन कह्यहु अगिन के ताहीं । वायु सहित तुम बीरज माहीं॥
जगहित अबहिँ करौ परबेसू । तौ यह बीरज जमहिँ सुबेसू ॥
पैठे वायु अगिन तब तामैं । जम्यहुं सुबीरज तहँ शुभ ठामैं॥
स्वेत अचलवत अगिन समानै । तेजवन्त दृढ़ बज्र प्रमानै ॥
सुभग सरन के बन बिच छायौ । स्वामिकारतिक जनम सुपायौ
तब सब सुर शिव पारबती कौं । करत भये पूजन अति नीकौं॥
सुरकृत पूजन गवरि न लीन्हौ । रिसिकरि श्रापसुरनकौं दीन्हौ
होइ न अब सन्ततिहु तुम्हारैं । किहिँ सुख लह्यउ अवर कौडारैं
बहुरि उमा पृथवी सों भाषी । पुत्र होंहि तूं यह अभिलाषी ॥
या हित तूं वह बीरज धारौ । तोहित सुतसुख होइ पियारौ॥
या कहि साप दई पुनि भारी । हो तूं बहु पुरुषन की नारी ॥
तब शिव हिमगिरि ऊपर गयऊ । पश्चिम शिखर महातप ठयऊ॥

दोहा ।

या विधि गौरी की कथा दीन्हीं तुमहिं सुनाइ ।
अब सब गंगा की कथा कहत सुनहु रघुराइ ॥

इति श्री बालकांडे षष्टविंशतिः सर्गः ॥ २६ ॥

छन्द।

तहँ तप करत लखि शम्भु कों सब अमर बिधि पासहिँ गये।
कर जोरि बिबिध प्रनाम करि लै हुकुम यों बोलत भये॥
जो तुम बतायौ हो हमहि शिवतनय सेनापति बली।
सो ह्वै सकत क्यों मौन ह्वै हर करत तपचरजा भली॥

दोहा।

सुत अब होंहिं न सुरन कें दयो उमा यह स्राप।
तातें होइ बिचार जो सो कहिये अब आप॥

चौपाई।

सुनि बिरंचि तब बात उचार्यौ। गवरिश्राप वह टरहि न टार्यौ॥
तातें अब सुभ नभगंगा में। ह्वै है अगिनतनय अभिरामैं॥
वह सेनापति तुम्हरो ह्वै है। उमहुँ बहुत सन्तोषहि पैहै॥
सु बड़ि महिन गंगा के नातें। निजसुतकरि मानहिगी तातें॥
यह सुनि देव गये कैलासै। बोले बचन पवन के पासै॥
जो तुम बीरज शिव को राखौ। सो अब गंगा गर्भ मै नाखौ॥
तब गंगा पहँ अगिन उचारी। देवकाजहित गरभहि धारी॥
जो तूं गरभ धरहिगी मोतें। सु बड़ बली सुत ह्वै है तोतें॥
सुनि गंगा सुत जो अभिलाष्यौ। अगिन तबहिँ शिव बीरज नाष्यौ॥
ताकि तेज सरित की काया। लागी दहन दुसहदुख पाया॥
गंग अगिन सौं भाषी ये जू। मोसौं सहि न परत यह तेजू॥
सुनि तब अगिन कह्यौं गङ्गा सूं। डार गरभ यह हिमगिरि पासूं॥
सुनि गंगा तब हिमगिरि पासै। डार्यौ गरभ बरच की रासै॥